भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 12 | उदयपुर शनिवार 01 जुलाई 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जुड़वां देवालयों की परम्परा और सास-बहू मन्दिर

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

जिस अधिष्ठान, जगती पर दो मन्दिर या निर्माण होते हैं उनको सास-बहू, गुरु-चेला, मामा-भांजा, देरानी-जेठानी आदि नाम दिए जाते हैं। कई बार निर्माताओं के सम्बन्ध भी इसका कारण होते हैं। 'सहस्त्रबाहू' जैसी कल्पना मिथ्या है और व्यर्थ के भ्रम फैलाने से ज्यादा कुछ नहीं। सहस्त्रबाहु मन्दिर जैसी कोई परम्परा भारत में कभी नहीं रही। लोक की लकीर पर यकीन करें तो कहा जाता है, सास से छुप कर बहू और बहू से बचाकर सास ने मन्दिर का निर्माण करवाया क्योंकि दान पुण्य करने में एक हाथ दूसरे हाथ को नहीं देखे।

भारतीय उपमहाद्वीप में देवालयों का अपना विधान और अपना वैभव है। भारत में मनुष्यालय के साथ ही देवालय और जलालय का अपना न्यास और विन्यास मिलता है। इनके निर्माण नियमों के लिए बड़ी संख्या में ग्रंथों का प्रणयन और पुण्यों का विधान हुआ है। आगम से लेकर स्वतंत्र ग्रंथों की रचना भी कम नहीं हुई। आस्था की पगडंडियां देवालयों को सुदृढ़ आधार देती हैं। ये पूर्त नामक कर्तव्य की सफलता और आस्था के अनुष्ठान भी हैं। इनके अधिष्ठान पर शतायु जीवन और प्रबल पुरुषार्थ की सीढ़ियां रची गई हैं।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

सास बहू के नाम से भारत में अनेक मन्दिर हैं। इनका सीधा अर्थ है - जुड़वां प्रसाद। जिस अधिष्ठान, जगती पर दो मन्दिर या निर्माण होते हैं उनको सास-बहू, गुरु-चेला, मामा-भांजा, देरानी-जेठानी आदि नाम दिए जाते हैं। कई बार निर्माताओं के सम्बन्ध भी इसका कारण होते हैं। 'सहस्त्रबाहू' जैसी कल्पना मिथ्या है और व्यर्थ के भ्रम फैलाने से ज्यादा कुछ नहीं। सहस्त्रबाहु मन्दिर जैसी कोई परम्परा भारत में कभी नहीं रही।

सहस्त्रबाहू जिन लोगों ने प्रचारित किया, वे युगल-निर्माणों की परम्परा नहीं जानते। उदयपुर के पास उजाड़ नागदा नगरी में भी सास-बहू मन्दिर है। उनको बनाने वाली सास और बहू का नाम पता लगाने में मुझे बीस बरस खर्च करने पड़ गए।

तब लगा कि यह बात सर्वथा भ्रामक है कि यह 'सहस्त्रबाहू' नहीं सास और बहू का बनवाया गया का मन्दिर है। इसके पास ही सेनापति वराहसिंह की पत्नी यशोमती ने 661 ई. में मधु कैटभरिपु यानी भगवान विष्णु का मन्दिर बनवाया। इसी काल से मेवाड़ में अनेक रानियों और बहन-बेटियों ने विष्णु मन्दिर बनवाए तथा उनकी नियमित पूजा अर्चना के लिए भूमिदान कर ताम्रपत्र दिए, अभिलेख लिखवाए।

जुड़वां बावड़ियां और मंदिर :

हमारे यहाँ निर्माणों की कई जोड़ियां हैं। जैसे - देरानी-जिठानी के कुंड (हाड़ौती), बावड़ी या तालाब या हवेली (चित्तौड़गढ़, बंबावदा), ननद-भावज के मालिये (भिनाय), पौढ़ी और घाट (पुष्कर, शिवद्वार), गुरु-चेला के मन्दिर, मठ, मीनार (सागवाड़ा, द्वारका, झालावाड़), मामा-भांजे के भण्डारे, मन्दिर और गोठां (झालावाड़ आदि), देवर-भाभी की दांग, चौक, आंगणा, सास-बहू के देवल, तीर्थ-घाट, छतरियां, देवलियां (मेवाड़ का प्रारम्भिक इतिहास) झालावाड़ में असनावर के पास ग्वाले का मन्दिर छनयारी और पनियारी के मन्दिर स्थित हैं जो जिन्होंने बनवाए हैं उनके नाम को इंगित करते हैं। लोक की लकीर पर यकीन करें तो कहा जाता है, सास से छुप कर बहू और बहू से बचाकर सास ने मन्दिर का निर्माण करवाया क्योंकि दान पुण्य करने में एक हाथ दूसरे हाथ को नहीं देखे।

जोड़ियों के रूप में निर्माण की अनेक यादें हैं, यादगार इमारतें हैं। गुजरात के लवाना गांव के जुड़वां जलस्रोत बहुत रोचक लगते हैं। महीसागर जिले में बाकोर तहसील और उसमें लवाना के पास कालेश्री मन्दिर समूह। यहां सोलंकी काल की नायाब रचनाएं हैं।

देव स्थापत्य, जन स्थापत्य और जल स्थापत्य तीनों तरह की विरासत इस तीर्थ को आकर्षक बनाए हुए हैं। यहां नर्तक शिव विराजित हैं मगर मान्यता माता के रूप में है और पास ही कुण्ड व बावड़ियां हैं। यह बहुत रोचक है कि यहां 'बहू की बावड़ी' है। सास-बहू के रिश्ते ने हमारे देश को जाने कितनी कहानियां तो दी ही, कितनी निर्मितियां भी दी। कहीं सास-बहू की सरायें हैं तो कहीं सास-बहू के कूप। सांसारिक रिश्ते न सही, स्थापत्यिक सम्बन्ध स्थायी रहे, इस उद्देश्य को संभवत: ध्यान में रखा गया हो। ये निर्मितियां निश्चित ही नयनरम्य हैं। इसीलिये अधिगम्य और सुरम्य बनी-ठनी लगती हैं। इसी तरह देरानी-जिठानी की बावड़ी बूंदी में है। बाईजीराज-बहूजी की बाड़ी-बाव, गुरु-चेला की समाधियां। ऐसे प्रसंग देशभर में मिलेंगे और, हम कब तक सहस्त्रबाहू कहते रहेंगे? ऐसे ही सास-बहू का प्रसिद्ध मन्दिर ग्वालियर में भी है और उसकी इतनी ख्याति है कि मेवाड़ के मंदिरों का इतिहास उसके साथ जोड़ दिया जाता है।

नागदा के सास बहू मंदिर :

हमें याद रखना चाहिए कि उदयपुर जिले में नागदा (नागह्रद, ऐसे नाम हर्षवर्धन के काल से ही प्रसिद्ध रहे और नाग से जुड़े रहे) नामक एक ध्वंस नगरी में सास-बहू के मन्दिर हैं। एक ही जगती पर दो मन्दिरों के अवशेष हैं लेकिन ये दो ही नहीं थे बल्कि दस मन्दिर रहे होंगे जिनके अधिष्ठान शेष हैं। जो दक्षिण और पश्चिम में दिखाई देते हैं। मुख्य दोनों मन्दिर पूर्वाभिमुख हैं और विष्णु को समर्पित हैं। गुहिल रानी महालक्ष्मी और उसकी बहू हरियादेवी जो हूण राजकुमारी थी, को इन मन्दिरों के निर्माण का श्रेय है। यह बात 10वीं सदी की है। मेवाड़ की इन रानियों का नाम शिलालेख ही नहीं, जैन स्रोतों में भी मिलता है।

सुंदर तोरण और अनोखे हिंडोले :

यह वह काल था जबकि मन्दिरों को स्वर्ग के सोपान द्वार रूप तोरण और हिंडोलों से सज्जित किया जाता था। बाहरी भित्ति को अर्थ, धर्म, काम रूप धारणा प्रतिमा फलकों से किसी गहने की तरह मण्डित किया जाता था। विष्णु को पोषण करने वाले देवता के रूप में सम्मान देने के लिए पितामह ब्रह्मा और शिव को परिक्रमण करते दिखाया जाता था। विष्णु के अवतार और अवतारी कथाओं को जहां तहां उकेरा जाता - ये सब मान्यताएं यहां पाषाण पर उत्कीर्ण हैं। यहां जो शिल्पकला अपने वैभव को लिए है, वह भारतीय कला में अलंकार प्रधान आचरण को बताती है। यहां जो पाषाण मिला, वह कलाकारों की कल्पना के मुताबिक ढल सकता था और यही वजह रही कि चावल के दाने से लेकर ताल प्रमाण का यहां कला में प्रयोग करने की सुगमता रही। जगत, मंदेसर के मन्दिरों की अपेक्षा यहां की मूर्तियों का मान सूक्ष्म है और यही कारण है कि यह सोमपुरा शिल्प से अलग है।

यह वही काल था जबकि निकटस्थ कैलाशपुरी में लकुलिश मत मान्य लकुल शिव का मन्दिर बना। उसको 981 ईस्वी की प्रशस्ति में 'नाथ मन्दिर' कहा गया है। शिवधाम तब अलंकरण प्रधान नहीं थे। ये दो मन्दिर असाधारण और एक साधारण। दो में राग और अनुराग को दिखाना था और एक में वैराग्य को। कभी किसी ने इस तरह नहीं सोचा लेकिन यहां यह सब सच लगता है।

विश्वकर्मा के ग्रंथों का ऐसा सुंदर प्रयोग और सुघड़ स्वरूप नागदा के बाद आबू पर हुआ जो देलवाड़ा के मन्दिर के नाम से जाने जाते हैं। दरअसल नागदा के पास ही देलवाड़ा है। नागदा की कला इतनी मानक सिद्ध हुई कि भुवनदेव को 1230 ई. में सूत्र संतान गुण कीर्ति प्रकाश की रचना करनी पड़ी और उसके सूत्र अगली कई सदियों के लिए चालुक्यों के आश्रय में शिल्पियों के लिए व्यवहार्य हो गए।

जीवन में चातुर्मास का विशेष महत्त्व

-मुनि मनितप्रभ सागर-

चातुमार्स का अभिप्राय है- अपनी आंतरिक व्याधियों की चिकित्सा करना। शारीरिक व्याधि की चिकित्सा हेतु अनेक रोग-निदान केन्द्र बने हुए हैं पर आंतरिक दोषों की चिकित्सा के लिए गुरु रूपी डॉक्टर की जरूरत होती है। यदि उसके पास चार माह में अपनी क्रोध, मान, माया और लोभ की बीमारी, जन्म-जरा-मृत्यु की बीमारी आदि का उपचार नहीं करवाया तो निश्चित ही हमें अनंत-अनंत दु:खों को भोगने के लिए नरक व तिर्यंच गति में जाने की तैयारी करनी होगी।

जीवन में चातुर्मास का उतना ही विशेष महत्त्व है जितना कि मयूर में पंखों का, सावन में वर्षा का, फूलों में सुगंध का तथा गुड़ में मधुरता का महत्त्व है। पर्युषण पर्व से भी बड़ा उत्सव चातुर्मास है क्योंकि इन चार महिनों के दौरान ही पर्युषण, नवपद, ज्ञानपंचमी आदि पर्व मनाये जाते हैं।

दुनिया में दो प्रकार की माताएं हैं- एक जन्म देने वाली और दूसरी जीवन देने वाली। जीवन देने वाली मां का नाम है-जयणा। इसकी साधना व सेवा के लिए अधिकरणों को हटाना है और उपकरणों को सजाना है। अधिकरण वे साधन हैं, जो आत्मा से दूर ले जाते हैं, जैसे चूल्हा, टीवी, कूलर, पंखें इत्यादि। उपकरण वे साधन हैं जो हमें आत्मा के निकट ले जाते हैं, जैसे माला, शास्त्र, मुंहपत्ति आदि। आत्मा के निकट ले जाने वाले उपकरणों का प्रयोग करके हमें अपने जीवन में जयणा रूपी माता को स्थान देना है।

जीवन में चातुर्मास का उतना ही विशेष महत्त्व है जितना कि मयूर में पंखों का, सावन में वर्षा का, फूलों में सुगंध का तथा गुड़ में मधुरता का महत्त्व है। पर्युषण पर्व से भी बड़ा उत्सव चातुर्मास है क्योंकि इन चार महिनों के दौरान ही पर्युषण, नवपद, ज्ञानपंचमी आदि पर्व मनाये जाते हैं।

गणितीय गणना के अनुसार 12 में से 4 निकल जाय तो आठ बचते हैं पर किसान के ये चाह माह यूं ही निकल जायें तो कुछ नहीं बचता। एक जैन श्रावक के चार माह संवर जाये तो बहुत हद तक शक्य है कि उसका पूरा जीवन संवर जाये। चातुर्मास में हमें एक कक्षा आगे बढ़ना है। यदि कोई बालक एक ही कक्षा में 4 साल बैठा रहे तो अपने से आगे बढ़ते सहपाठियों को देखकर शर्मिन्दगी का अहसास करता है, वैसे ही बीसों चातुर्मास करने पर भी यदि जीवन नहीं बदलता तो कहना पड़ेगा कि हम उसी कक्षा में पढ़ रहे हैं जिसमें 20 साल पहले पढ़ रहे थे। मुश्किल यह है कि हमें न संकोच का अनुभव होता है, न पीड़ा का अहसास होता है।'

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास 352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

मेवाड़ की भूमि बीजेपी का गढ़ : अमित शाह

उदयपुर (ह. सं.)। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गांधी ग्राउण्ड में विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोतजी खामख्वाह इस आयु में इधर-उधर भटक रहे हैं। वर्ष 2023 तथा 2024 के चुनाव में पूर्ण बहुमत के साथ हमारी सरकार बनने जा रही है। मेवाड़ की भूमि को बीजेपी का गढ़ बताते अमित शाह ने कहा कि यह भूमि त्याग, बलिदान और भक्ति की भूमि है। राजस्थान से ही भाजपा की विजय पताका निकलती है।

राज्य की गहलोत सरकार पर कटाक्ष करते श्री शाह ने कहा कि इस बार एक ही वोट से दो काम करने हैं। वर्ष 23 के ट्रेलर में गहलोत सरकार को मूल से उखाड़ फैंकनी है तो 24 में नरेन्द्रभाई मोदीजी को प्रधानमंत्री बनाने 25 सीट लानी है। उन्होंने इसके लिए श्रोता समुदाय का समर्थन चाहने पर हर व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ लहराते हुए विजय की प्रचण्ड मुट्ठी दिखाई।

गहलोत सरकार को भ्रष्टाचार में नम्बर 1 की सरकार बताते अमित शाह ने कहा कि संविधान को दरकिनार कर वोट बैंक की राजनीति कर यह सरकार गरीब, पिछड़ों तथा आदिवासियों का हित-कल्याण भूल गई है। इसलिए यह अच्छा मौका है कि राज्य तथा केन्द्र की दोनों सरकारों को प्रचण्ड बहुमत के साथ विजीत करना है।

इस अवसर पर वर्ष 2022 में हुए कन्हैयालाल साहू हत्याकांड का जिक्र करते अमित शाह ने कहा कि कन्हैयालाल को सुरक्षा किसने नहीं दी? किसकी पुलिस चुप रही? कानून व्यवस्था की चरमराई स्थिति के कारण ही कन्हैयालाल के हत्यारों को कोई सजा नहीं दी अन्यथा दोषियों को अब तक फांसी पर लटका दिया होता। उन्होंने कहा कि यह उनका 15वां राज्य है जहां की यात्रा कर वे पिछले 9 वर्षों में भाजपा सरकार द्वारा किये गये जन विकास कार्यों की जानकारी देते जन-जन को मोदी सरकार को जिताने का जमीनी अभियान तैयार कर रहे हैं।

सभा में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सी पी जोशी, जलमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, सतीश पूनिया, राजेन्द्रसिंह राठौड़, हेमराज मीणा, दीयाकुमारी, अर्जुनलाल मीणा, अरूण सिंह, विजया राहटकर, अमृतलाल मीणा, कनकमल कटारा, अरूण चतुर्वेदी, प्रमोद सामर, पारस सिंघवी, रवीन्द्र श्रीमाली, ममता कुंवर आदि उपस्थित थे।

पोथीखाना

एकलिंगनाथ की स्तुति गान के 198 पदी गीत

उदयपुर के निकट प्रसिद्ध तीर्थ श्री एकलिंगजी की स्तुति में जिन रचनाकारों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये उनमें कैलाशपुरी निवासी हेमबिहारी दास का महत्त्व कई दृष्टियों से उल्लेखनीय है। प्रथम तो हेमबिहारी ने एकलिंगनाथ भगवान की सेवा में रह इन पदों का लेखन-श्रवण-गान किया फिर उनके गुरु बालानन्दजी के प्रति समर्पण भाव व्यक्त कीते स्तुति गान के 108 पद उन्हीं की छाप में लिखकर उनकी स्मृति को वन्दन किया है।

हमारे देश में ऐसी परम्परा के अनेक उदाहरण मिलते हैं जब किसी ख्यात भक्त के नाम से रचना कर व्यक्ति ऋण मुक्त होकर अपना अहोभाग्य मानता है। ऐसे सैकड़ों पद चन्द्रसखी के, मीरां के, कबीर के नाम-छाप के मिलते हैं।

इनमें सर्वाधिक मीरां के पद मिलते हैं। ऐसे भी भक्त हुए हैं जिन्होंने अपने यहां बस्ती में प्रतिदिन मांगने वालों के नाम से पद लिख-लिख उन्हें दिये हैं ताकि वे उनके गान के माध्यम से भगवान की भक्ति की मधुर गंगा प्रवाहित कर सकें।

श्री हेमबिहारी दासजी के इन पदों का संग्रह उनकी पुत्री श्रीमती वीणादेवी वैष्णव ने किया है। प्रारम्भ में हेमबिहारी वैरागी का परिचय देते अलवर में 1923

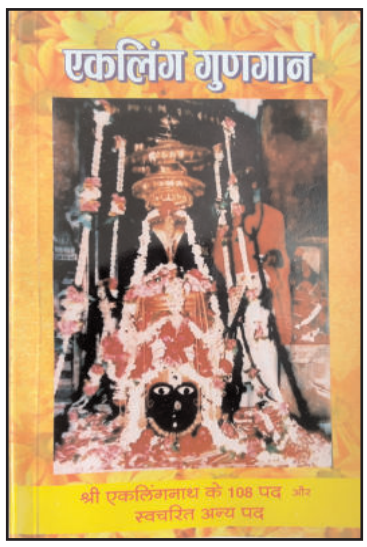

में जन्में हेमबिहारीजी ने घर पर ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू की शिक्षा ली।

अलवर दरबार ने गांधीजी को अपने यहां आमंत्रित किया तो ब्रिटिश सरकार के होश उड़ गये लिहाजा वहां कार्यरत कर्मचारियों पर वारंट छोड़े गये। इस लपेट में हेमबिहारी के पिताश्री भी आ गये। ऐसी स्थिति में 14 वर्ष की उम्र में नाना-नानी के पास कैलाशपुरी आ गये।

नाना अच्छे गवैये और तबला, सितार, सारंगी के साथ भजन गाते और सत्संग द्वारा जन जागरण करते। नानीजी कथा सुनाती, भजन गाती। स्वभावत: ये संस्कार हेमबिहारी ने ग्रहण किये। एकलिंगनाथ की सेवा करते पद लिखने, गाने तथा सत्संग करने के समर्पित अभ्यासी बन गये।

एकलिंगनाथ में 108 मन्दिर हैं जो इतने ही पद लिख गुरु बालानन्दजी को समर्पित करते उनके नाम की छाप दी। हेमबिहारीजी की कल्पनाशक्ति एक भिन्न रूप में नया कुछ अजूबा जो नहीं लिखा गया, उस पर लिखने में अधिक लगती फलस्वरूप उन्होंने रामायण के सबसे अछूते और अठीक समझे जाने वाले पात्र मंथरा के चरित्र को लेकर महाकाव्य लिखा। कवि श्री हेमबिहारीजी का स्वर्गवास 1995 में हुआ।

कुल मिलाकर 198 पृष्ठ की यह पोथी करूणानिधान वैष्णव, कैलाशपुरी से प्रकाशित 150 रूपये की है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

काव्य-कणिकाओं की अभ्यर्पणा

अणुव्रत महारथी देवेन्द्रकुमार कर्णावट से सम्बन्धित छोटी-बड़ी 45 काव्य-कणिकाओं का यह सम्पादित संग्रह 'अभ्यर्पण' कर्णावटजी की जन्मशताब्दी पर पाठकों को समर्पित है। देवेन्द्र काका जैसे लोकजीवन के समरस थे वैसी ही ये काव्य-कणिकाएं जन भावनाओं का प्रतिनिधित्व लिए हैं।

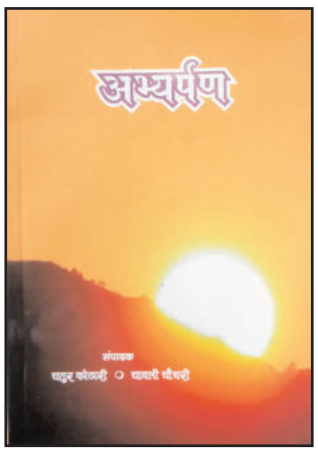

सम्पादक द्वय में चतुर कोठारी ने प्रारम्भ में 'प्रतिध्वनन' शीर्षक से कुछ कवियों की उल्लेखनीय काव्य-पंक्तियों के माध्यम से देवेन्द्रजी के व्यक्ति-कृतित्व को रेखांकित किया जबकि चावली चौधरी ने लिखा, 'अभ्यर्पण में संकलित भाव, विचार तथा यथार्थ से गुंफित कविताएं आत्मीय स्नेह सुधि पाठकों को समर्पित है।' वे लिखती हैं-

कुछ शब्द भावपूर्ण उद्‌गार होते हैं।
काका जैसे व्यक्तित्व इस कदर खास होते हैं।।
दूर कितना भी हो निगाहों से 'चौधरी'
सदैव जनमेदिनी के हृदय में विद्यमान होते हैं।।

'अभ्यर्पण' का प्रारम्भ कविमनीषी कन्हैयालाल सेठिया के 'अभिनन्दन' से होता है-

सादो जीवण, ऊंचो चिंतण, थांरी खरी कमाई।
बांध सकै कद थारै जस नै, म्हारा आखर ढाई?

अन्तिम काव्यार्पण कर्णावटजी के ही परिवार के सम्मान्य सदस्य लक्ष्मणसिंह कर्णावट की कविता 'तिरंगा में लिपटायग्यो' की अन्तिम पंक्तियां लिए हैं-

सफल सफलतम जीवन जीकर
अन्तिम आत्म सुधा रस पीकर
संथारे के चौथे दिन आत्मा अनंत में हुई विलीन
परिजन बिन पानी ज्यूं मीन
लाखां-लाखां आंखड़ल्यां में आंसुड़ा बहायग्यो
दो माता रे दूध रो वो कर्जो चुकायग्यो
नश्वर शरीर ने तिरंगा में लिपटायग्यो
तोपां री सलामी साथे अनंत में विलायग्यो।।

- डॉ. तुक्तक भानावत

मोदी विवि में डी फार्मा कोर्स की शुरूआत

उदयपुर (ह. सं.)। लक्ष्मणगढ़ स्थित मोदी विश्वविद्यालय द्वारा होटल रघु महल में 'संवाद' का आयोजन किया गया। डीजीएम एडमिशन प्रवीण झा एवं पीआरओ राजीव सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय का 265 एकड़ का

विशाल कैम्पस शिक्षा द्वारा नारी सशक्तिकरण के अभियान को सतत् आगे बढ़ा रहा है। राजस्थान सहित देशभर के छात्राओं के लिए मोदी विश्वविद्यालय ने इस साल भी कुछ खास छात्रवृति की घोषणा की है।

मोदी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइसेंस, स्कूल ऑफ इंजिनयरिंग, स्कूल ऑफ लॉ, स्कूल ऑफ डिजाइन एवं स्कूल ऑफ बिजनेस में विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर के साथ पीएचडी के भी कोर्स कराये जाते हैं। विश्वविद्यालय में कई स्किल बेस्ड कोर्सेस मसलन डेटा साइंस, मशीन लर्निंग, फॉरेनसिक साइंस, फूड एंड न्यूट्रीशयन, फिजयोथेरेपी, जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन, बॉयोमेडिकल एवं न्यूक्लियर साइंस एंड टेक्नोलॉजी जैसे सरीखे कोर्स जो कि पूर्णत: कौशल आधारित है और छात्राओं को बेहतर भविष्य की ओर ले जाता हैं।

उन्होंने बताया कि छात्राओं को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए विश्वविद्यालय ने वर्तमान सत्र से डी फार्मा कोर्स की शुरूआत की है। सभी वर्गों को शिक्षा का समान अवसर मुहैया कराने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने ऑनलाईन माध्यम की भी शुरूआत की है जिसके अर्न्तगत बीए, बीकॉम, एम कॉम के साथ ही एमबीए और एमसीए जैसे विभिन्न कोर्सेस करवाए जाएंगे। इस माध्यम में छात्राओं के साथ छात्र भी दाखिला ले सकते हैं।

उन्होंने बताया कि आरएएस, पीसीएस एवं आइएएस जैसी परीक्षाओं के तैयारी के लिए विश्वविद्यालय कैंपस में ही छात्राओं को विशेष सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं और इसके लिए प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान समकल्प, नई दिल्ली से अनुबंध किया गया है ताकि छात्राओं को स्नातक के दौरान ही तैयारी का बेहतर अवसर प्राप्त हो सके। मोदी स्कूल और विश्वविद्यालय छात्राओं की शिक्षा को अनवरत जारी रखना चाहती है और इसी के मददेनजर स्कूल एवं विश्वविद्यालय कई स्तर पर छात्राओं के लिए छात्रवृति लेकर आयी है, आर्थिक स्थिति किसी के भी शिक्षा में रूकावट न बन सके। छात्रवृति स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों के लिए लागू है।

इसके साथ ही मोदी विश्वविद्यालय की विशेष छात्रवृति योजना के तहत, पुलिस, सेना और अर्द्धसैनिक बलों में कार्यरत या सेवानिवृत्त जवानों के बच्चों को पूरी पढ़ाई के दौरान ट्यूशन फी में 35 प्रतिशत की छात्रवृति प्रदान की जाएगी।

राजस्थान में श्रमण संस्कृति बोर्ड गठित हो

उदयपुर (ह. सं.)। श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को पत्र लिखकर आग्रह किया कि राज्य में जिस प्रकार से सर्व समाज के कल्याण हेतु विभिन्न बोर्डों का गठन किया जा रहा है ठीक उसी प्रकार जैन समाज के कल्याण एवं उत्थान हेतु 'श्रमण संस्कृति बोर्ड' का गठन हो ताकि जैन संस्कृति का अधिक प्रचार-प्रसार हो सके। पिछले साढ़े चार वर्षीय कार्यकाल दौरान राजस्थान राज्य ने विभिन्न क्षेत्रों में काफी प्रगति की है।

श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र ने कहा कि राज्य के अल्पसंख्यक वर्ग का जैन समुदाय पिछले चार वर्षों से उचित माँग कर रहा है कि राज्य में श्रमण संस्कृति बोर्ड स्थापित किया जाए जिसके अंतर्गत जैन समुदाय अपनी मूलभूत समस्याओं व अपने सिद्धांतों की पुरजोर रक्षा-सुरक्षा कर सके।

प्रो. सारंगदेवोत को डी.लिट की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। कम्प्यूटर साइंस एवं इंफॉर्मेशन टेक्नॉलोजी में शिक्षा, शोध, पेटेंट, कॉपीराइट्स, नवाचारों एवं प्रशासनिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए अमेरिका की मेरीलैण्ड स्टेट यूनिवर्सिटी ने नई दिल्ली में आयोजित समारोह में राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को कम्प्यूटर साइंस एवं इंफॉर्मेशन टेक्नॉलोजी में डी.लिट की उपाधि से नवाजा है।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। संस्थान द्वारा किये गए नवाचार, शोधकार्य, विकास कार्य, फेकल्टी डवलपमेंट के साथ कई पेटेंट भी कराए हैं। इसी का परिणाम है कि विद्यापीठ ने राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई है। इस अवसर पर मेरीलैण्ड स्टेट यूनिवर्सिटी के चांसलर ने प्रो. सारंगदेवोत का उल्लेख करते हुए उन्हें दीक्षानत समारोह के अग्रणी किवदंती के रूप में वर्णित किया और प्रो. सारंगदेवोत को सादगी, विनम्रता, कृतज्ञता, साहस, दृढ़ता, उदारता, समभाव, शांति और अच्छाई का प्रतीक बताया।

खजूर वृक्षों पर फलों की बहार

उदयपुर के निकट कैलाशपुरी गांव स्थित श्रीएकलिंगजी तीर्थ वाला क्षेत्र किसी समय नागदा नाम से बहु विख्यात रहा। यहां स्थित सास-बहू का मन्दिर तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ का विकसित शैली का भव्य मन्दिर रहा। इसी के अहाते में खजूर वृक्षों की इतनी अधिकता है कि यह क्षेत्र इन वृक्षों का खुजराहो ही कहा जा सकता है। अनेक वृक्ष खजूर फलों से लड़ालूम हैं। कबीर ने इसी वृक्ष की उपमा दिये यह दोहा लिखा था-

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे वृक्ष खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

प्रेषक - जितेन्द्र मेहता

स्मृतियों के शिखर (167) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सती प्रथा के साथ सता प्रथा भी

सती-सताओं के कई देवरे, देवल, मन्दरी, छतरी, चबूतरे मिलेंगे, शिलालेख मिलेंगे और उनके सम्बन्ध में गीत, गाथाएं, कथा, किवदंतियां मिलेंगी। प्राय: प्रत्येक जाति में सती प्रथा की परम्परा रही है। राजस्थान में अपनी शोधयात्राओं के दौरान मेरे देखने में कई सती-सता स्मारक आये हैं। बीकानेर की सतियों की बगीची में सतियों के कई स्मारक के साथ सताओं के भी कुछ स्मारक बने हैं।

हमारे यहां मुख्यत: राजस्थान में सती प्रथा का तो बड़ा जोर रहा ही है पर सता प्रथा के उदाहरण भी कई मिलते हैं। सती-सताओं के कई देवरे, देवल, मन्दरी, छतरी, चबूतरे मिलेंगे, शिलालेख मिलेंगे और उनके सम्बन्ध में गीत, गाथाएं, कथा, किवदंतियां मिलेंगी। प्राय: प्रत्येक जाति में सती प्रथा की परम्परा रही है। राजस्थान में अपनी शोधयात्राओं के दौरान मेरे देखने में कई सती-सता स्मारक आये हैं।

सतियों के सम्बन्ध में प्राय: यही बात अधिक सुनने को मिलती है कि जो स्त्री अपने मृत पति के सिर को अपनी गोद में लेकर उसके साथ चिता में जल मरे वही सती कहलाती है पर ऐसी बात नहीं है। बीकानेर प्रवास के दौरान जब मैं उदय नागोरी के साथ दम्माणियों के चौक में जसोलाई के पास सती की मन्दरी देखने गया, तो वहां लगे संगमरमर के शिलालेख के अनुसार संवत् 1867 में श्रीनाथजी व्यास की पत्नी अपने इकलौते पोते के साथ सती हुई थी।

इतिहास प्रसिद्ध हाड़ीराणी तो रण जाते हुए अपने पति को अपना मस्तक देकर अग्रिम सती हो गई। गुजरात में पति के वचन भंग करने तथा उसके असमर्थ होने के कारण सती होने के उदाहरण मिलते हैं।

पशुप्रेम तथा उनकी रक्षा हेतु स्त्रियों के सती होने की घटनाएं भी इधर प्रचलित है। यहां के मोतीगांव में एक पालतू नीलगाय के मर जाने पर बाईस चारण कन्याएं सती हो गई। ये कन्याएं 'आइयां' नाम से जानी जाती हैं। विवाह पूर्व सती होने के प्रसंग भी पुरानी बहियों में मिलते हैं। संवत् 1545 माघ शुक्ला दशमी को सरस्वती नामक बारह वर्षीय मंगेतण ने जब यह सुना कि उसके भावी पति की सर्पदंश से मृत्यु हो गई तो घोड़े पर सवार हो वह गाजे-बाजे के साथ सती हो गई।

सतियों की तरह सताओं के भी ऐसे ही विविध घटना प्रसंग मिलते हैं। चुरू के गोविन्द अग्रवाल ने बताया कि संवत् 1727 में कच्छ में बड़ा रतड़िया का चारण बाला भोजा अपनी वेणु नामक पत्नी के पीछे सता हुआ। इसी प्रदेश का माधवजी कापड़ी अपने रणमल बापा नामक गुरु के पीछे सता हो गया। बीकानेर की 'सतियों की बगीची' में सतियों के कई स्मारक के साथ सताओं के भी कुछ स्मारक बने हैं। यहीं 'सता की मन्दरी' के पास लगे एक शिलालेख में बीकानेर की स्थापना से पूर्व ललाजी व्यास द्वारा

अपनी पत्नी के पीछे सता होने का उल्लेख है।

फतहपुर का सांस्कृतिक इतिहास लिखने वाले ओंकारश्री ने बताया कि फतहपुर-शेखावाटी का इलाका जहां सतियों के लिए प्रख्यात रहा है, वहां सताओं के लिए भी कम प्रसिद्ध नहीं है। इधर भाई का बहिन के पीछे तथा प्रेम-सम्बन्धों को लेकर सता होने के कई किस्से प्रचलित हैं।

भिखमंगे तब इधर सती-जती के नाम की भीख मांगते सुने गये हैं- 'कोई दीजो रे सती जती रे नाम।' लोकसंस्कृति के अध्येता डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी ने बताया कि जैसलमेर में बालिकाएं जो खेल-गीत गाती हैं, उनमें गुड़िया के मरने पर गुड्डे द्वारा सता होने का उल्लेख है-

म्हे-म्हे वेगो रे आय रे
दूली मरे दूलो सतो चढ़े रे
अर्थात् - मेह-मेह, वर्षा-वर्षा जल्दी आव। गुड़िया के मरने पर गुड्डे को सत चढ़ रहा है।

सन् 1984 के जुलाई माह में मेरी मेड़ता सिटी की यात्रा बड़ी दिलचस्प रही। यहां सतियों की छतरियां स्थल में पांचों छतरियां राजा रतनसिंह की रानियों की हैं। ये रतनसिंह के साथ सती हुईं।

कहते हैं इनके साथ 552 महिलाओं में आत्मलोपण किया। इन छतरियों के पास एक सती-स्मारक और है। इस पर एक सती की मूरत है जिसकी गोद में बच्चा सोया हुआ है।

कहा जाता है कि 35 वर्षीय यह सती कुंवारी थी। अन्य सतियों के साथ इसे भी सत चढ़ा पर कुंवारी सती नहीं हो सकती थी सो एक बनिये के एक वर्ष के बालक के साथ उसके भांवर कराये गये। बाद में वह उसे गोद में लेकर सती हुई।

सती हर कोई नहीं हो सकती। सता भी हर कोई पुरुष नहीं हो सकता। जिसे सत चढ़ता है वही सती-सता हो सकता है। सती-सतों के कलेजे फौलादी होते हैं जो सदैव आग से खेलते जुझारू किस्म के होते हैं। सत एक प्रकार का उन्माद होता है। यह अदृश्य होता है। यह सबमें होता है। यहां तक कि पाप कर्म करने वालों में भी होता है जो उन्हें दुष्कर्म करने से रोकता है। सत सदैव सत्पथगामी होता है।

सत इसीलिए सबसे ऊपर रहता है, सर्वोपरि होता है। इसके नीचे सती-सता होते हैं। उनके नीचे संत-संताणी होते हैं। सती-सता सदैव ऊपर निहारते हैं जबकि संत-संताणी नीचे दृष्टि किये रहते हैं।

यदि सती-सता नीचे देखते हैं तो उनका सतीत्व-सतात्व भंग होता लगता है। ऐसी ही स्थिति संत-संताणी की होती है। यदि वे ऊपर देखते हैं तो उनका सतीत्व-सतात्व लज्जित होता है।

मालवा स्थित मनासा के निवासी लोकजीवन के सतत खोजक डॉ. पूरन सहगल ने बताया कि उधर सतियों के किस्से तो मिलते हैं पर सतों के होने के नहीं सुने गये पर एक दिलचस्प घटना का जिक्र किया कि किसी समय जो बावड़ी किसी सती के नाम से बनवाई गई वह 'सतियां री बावड़ी' धीरे-धीरे नासमझ तथा गलत उच्चारण के कारण 'सत्यां री बावड़ी' से होते-होते 'हत्या री बावड़ी' नाम से जानी जाने लग गई।

पूर्व में किसी शासक के निधन पर उसके साथ अधिकाधिक सतियां होना उसकी प्रतिष्ठा का सूचक था। सती होने वाली सौलह शृंगार से युक्त होकर मुख्य दरवाजे के बाहर निशानी स्वरूप अपने हाथों का थापा देकर जाती थी। ऐसे प्राचीन थापे आज भी मुख्य पोलों, दरवाजों पर देखने को मिलते हैं।

प्रसिद्ध रणक्षेत्र हल्दीघाटी के पास माटी के देवी-देवताओं के निर्माण के लिए विश्वप्रसिद्ध मोलेला गांव का जब पहलीबार मैंने 1959 में अध्ययन-अवलोकन किया तो वयोवृद्ध चुन्नीलालजी कुम्हार ने बताया कि अन्य देव-देवी प्रतिमाओं के साथ वे माटी का सती माता का हाथ भी बनाते हैं जिसे भक्त लोग श्रद्धा से ले जाकर घर में स्थापित करते हैं। पूछने पर यह भी बताया कि उनके बड़ेरे किसी समय सती हाथ के साथ सता हाथ भी बनाते थे पर अब कुल पन्द्रह-बीस घरों में कोई नहीं बनाता है।

पत्रों के आलोक में (9)

श्री शोभालाल गुप्त, नई दिल्ली के पत्र

श्री शोभालाल गुप्त जानेमाने स्वतंत्रता सेनानी थे। वे खद्दर का धोती-जब्बा पहनते गहरा श्याम वर्ण लिये थे। उनका एक हाथ कुहनी तक ही था पर वे जब्बे की बांह पूरी रखते थे। उदयपुर में जब भी आये, कनक मधुकर के निवास पर ही मिले। झीणीरेत, सूरजपोल में मधुकरजी का अच्छा भवन है। यहीं से उनका साप्ताहिक 'नवजीवन' प्रकाशित होता।

उदयपुर मैं सन् 1958 में आया पर जब मैं नवमीं में पढ़ता था तब पहलीबार मेरी कविता नवजीवन में छपी। कनकजी भी स्वतंत्रता सेनानी थे। वे खद्दर के पहनावे में सफेद टोपी भी पहनते थे। उदयपुर में नन्द चतुर्वेदी के साथ हमारी उनसे बड़ी घनिष्टता रही। वे मेवाड़ के स्वतंत्रता सेनानियों के संगठन के अध्यक्ष थे। पक्के कांग्रेसी थे। एकबार तो उन्होंने मुझे फोन भी किया था कि गुप्तजी शोभालालजी आये हुए हैं। मेरे यहीं ठहरे हैं। वे आपको याद कर रहे हैं सो आकर उनसे मिल लें।

गुप्तजी नई दिल्ली से प्रकाशित 'दैनिक हिन्दुस्तान' के सम्पादक थे। तब मेरा उनसे कोई परिचय नहीं था पर हर रविवारीय उसमें 'व्यक्ति साहित्य और समस्याएं' नाम से एक स्तम्भ होता था जिसमें मैंने उदयपुर के देवीलाल सामर, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, कविराव मोहनसिंह, गोरधन बाबा आदि के अलावा बीकानेर के अगरचन्द नाहटा एवं नरोत्तमदास स्वामी पर आलेख लिखे। समय-समय पर और भी आलेख छपे।

देवीलाल सामर अपने कठपुतली दल को लेकर जब 1965 में बुखारेस्ट में होने वाले तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में जा रहे थे तब अपने कार्यालय में गुप्तजी बड़ी देर तक भारतीय लोककला मण्डल की विभिन्न प्रवृत्तियों की जानकारी लेते रहे और अपनी शुभकामना व्यक्त कर मुझे बाद में समारोह सम्बन्धी आलेख लिखने को भी कहा।

दिल्ली में ही हम दिनेशनंदिनी डालमिया से उनकी कोठी पर मिलने गये जो उदयपुर की ही थीं और सामरजी के साथ वह भी प्रसिद्ध गद्य काव्य लेखिका के साथ ख्याति लिए थीं।

गुप्तजी के लिखे मेरे संग्रह में चार पोस्टकार्ड हैं। इनमें से दो सन् 1990 के तथा शेष दो सन् 1991 के हैं। डी-31 गुलमोहर पार्क से 29 अगस्त 1990 के पत्र में उन्होंने लिखा-

प्रिय भानावतजी,

जय राजस्थान के 'चलते-चलते' स्तम्भ में आकोला के मोहनलालजी के जीवन और कृतित्व पर आपने प्रकाश डाला, उसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। उनका साहित्य पढ़ने की इच्छा है। क्या वह कहीं से उपलब्ध हो सकता है। मुझे खेद है कि मैं मूलत: उसी क्षेत्र का होते हुए भी उनसे सम्पर्क नहीं साध सका। आपके व्यस्त समय से कुछ समय निकालकर उत्तर लिखेंगे तो आपका आभार मानूंगा। आपके 'चलते-चलते' का मैं नियमित पाठक हूं। आप बहुत अच्छा लिखते हैं।

उल्लेखनीय है कि उदयपुर में प्रथम दैनिक रूप में सम्पादक चन्द्रेश व्यास ने जय राजस्थान का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। मैं इसमें हर रविवार 'चलते-चलते' नाम से स्तम्भ लिखता था। यह स्तम्भ 25 वर्ष तक मैंने लिखा।

दूसरा कार्ड 07 दिसम्बर 1990 का है। इसमें लिखा-

आपकी लेखनी का चमत्कार जय राजस्थान में कभी-कभी देखने को मिल जाता है। मैं आपका फेन बन गया हूं। खूब लिखते रहें। आपको तो ज्ञात ही होगा कि गोपालप्रसाद व्यास के प्रयत्न से दिल्ली में विशाल हिन्दी भवन बन रहा है। भवन के सभागार में मीरां का चित्र भी लगाना है। मीरां का असली चित्र भी लगाना है। मीरां का असली चित्र बनवाकर या पहले से उपलब्ध हो तो उन्हें भिजवादें। उसके आधार पर बम्बई में सूर तुलसी आदि के चित्र भी बनाये जा रहे हैं।

उदयपुर की नगरी में ये साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं। आप लोगों ने भारतीय जनता को वोट देकर कुछ अच्छा नहीं किया। उसी ने साम्प्रदायिक द्वेष भड़काया है और धर्म का राजनैतिक लाभ के लिए उपयोग कर रही है।

अपने 19 सितम्बर 1991 के पत्र में वे लिखते हैं-

16 सितम्बर को ही मैंने अपने जीवन के 87 वर्ष पूरे कर लिये। आपकी शुभकामनाओं का संबल चाहिये।

गुप्तजी ने 31 मई 1991 के पत्र में लिखा-

मैं पिछले डेढ़ महीने से प्रवास में रहा। आपके होनहार सुपुत्र मुक्तकजी के निधन का समाचार न जान पाया और आपको पत्र भी न लिख सका। अभी नवजीवन के अप्रेल के अंक में यह दु:खद समाचार छपा देखा। चित्त को बड़ा आघात लगा।

25 वर्ष की जवानी की आयु में श्री मुक्तक के निधन से आपको, आपके परिजनों और इष्टमित्रों को निश्चय ही बड़ा आघात पहुंचा होगा। मैंने भी पीड़ा महसूस की है। 01 अप्रेल से 08 अप्रेल तक जयपुर में था किन्तु मालूम न हुआ कि उनका जयपुर के अस्पताल में इलाज हो रहा है। पता होता तो उनको देखने अवश्य आता। आप तो दार्शनिक हैं। इस दुर्घटना को उसी दृष्टि से लेंगे।

आपका
शोभालाल गुप्त

- म. भा.

डॉ. हुकमसिंह भाटी को सीनियर फैलोशिप

जोधपुर (ह. सं.)। राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर के पूर्व निदेशक डॉ. हुकमसिंह भाटी को भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नईदिल्ली की ओर से सीनियर एकेडेमिक फैलोशिप स्वीकृत की गई है। डॉ. भाटी 'राजस्थानी ऐतिहासिक स्रोतों की अध्ययन प्रणाली' विषय पर राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी के तत्वावधान में यह शोध कार्य करेंगे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. भाटी ने उक्त परिषद के अलावा राष्ट्रीय अभिलेखागार एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के माध्यम से प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर एवं राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी में 20 ठिकानों की हजारों बहियों, पट्टे-परवानों का परिरक्षण करने के साथ ही ग्रन्थों की खोज, सर्वेक्षण, सम्पादन और इतिहास लेखन का कार्य कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

साहित्य पुरस्कारों की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राजस्थान में पहलीबार ग्यारह-ग्यारह लाख के चार साहित्य पुरस्कार प्रदान करने की महती घोषणा की गई। ये पुरस्कार साहित्य की विविध विधाओं में ख्याति अर्जित करनेवाले स्मृतिशेष साहित्यकारों के नाम से प्रदान किये जायेंगे। इनमें पद्यविधा का कविमनीषी कन्हैयालाल सेठिया, लोकसाहित्य कलाविधा का कोमल कोठारी, भाषाविधा का सीताराम लालस तथा गद्यविधा का विजयदान देथा के नाम से नकद राशि, प्रशस्तिपत्र एवं शॉल रूप में दिये जायेंगे।

लोककला विकास बोर्ड का गठन

उदयपुर (ह. सं.)। लोककला से सम्बद्ध जातियों तथा कलाकारों की कला-धरोहर के संरक्षण तथा कलाकारों को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए उपयुक्त मंच सुलभ कराने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा लोककला विकास बोर्ड का गठन किया गया है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बोर्ड के गठन को मंजूरी देते हुए अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के अलावा सात गैर सरकारी सदस्यों के साथ ही सचिव तथा सम्बन्धित स्टाफ शीघ्र उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। इस बोर्ड में कालबेलिया, लंगा, मांगणियार, नट, जागा सहित कला से जुड़ी जातियों तथा वर्गों को जगह मिलेगी।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 जुलाई 2023

सम्पादकीय

बलिहारी गुरु आपकी

शास्त्रकारों और समाजजनों ने गुरु को सर्वोच्च पद दिया है। सच भी है, गुरु ही विवेक, ज्ञान तथा अगजग को जानने, सोचने, समझने तथा तद्जनित व्यवहार करने का पथ प्रशस्त करता है। यही कारण है कि विज्ञजनों ने अनेक रूपों में गुरु की अभ्यर्थना की है। गुणगान किया है और अपने श्रद्धा-सुमन भेंटकर आत्मतोष पाया है।

ऐसे गुरु गुणगान के भगवान एकलिंगजी की स्तुतिपरक 108 पदों की रचना कविवर हेमबिहारीदास ने की और उन पदों के अन्त में अपने गुरु बालानन्द के नाम की छाप लगाकर अपने को उपकृत किया है। बालानन्द गुरु कौन थे, इस सम्बन्ध में कोई ज्ञातव्य उपलब्ध नहीं है।

हेमबिहारीदासजी के इन 108 पदों तथा शेष 98 पद उनके द्वारा रचित उनकी लड़की वीणादेवी वैष्णव ने प्रकाशित करवाकर उनकी स्मृति को जीवन्त किया अन्यथा ये सारी साहित्यिक धरोहर ओझल हो जाती।

हमारे यहां कवियों में बिहारी नाम के दोहे वाले कवि तो हिन्दी साहित्य में अधिक प्रसिद्ध हुए हैं जिन्हें जयपुर राजा ने एक-एक दोहे पर एक-एक अशर्फी भेंट की थी पर मेवाड़ में भी बिहारी नाम के एक तो हेमबिहारी और दूसरे रसिक बिहारी हुए हैं। रसिक बिहारी अयोध्या से घूमतेघामते पहले बड़ीसादड़ी आये पर वहां उनका मन नहीं रमा सो वे कानोड़ आ गये।

कानोड़ मेवाड़ के 16 प्रमुख ठिकानों में प्रमुख नाम लिए रहा। यहां के महल आज भी उस बुलन्दी का बखान लिए हैं। हालांकि अब तो वहां कोई रहता ही नहीं है पर रसिक बिहारी ने यहां रहकर 18 ग्रन्थों की रचना की। रामरसायण नामक उनका महाकाव्य यहीं लिखा गया जिसे कानोड़ रावजी, रावतजी सारंगदेवोत ने प्रकाशित कर सभी ठिकानों में भिजवाया।

कवि हेमबिहारी ने विकल कवि का कुछ दिन एकलिंगजी में सान्निध्य लिया। उनका हेमबिहारी पर बड़ा प्रभाव पड़ा फलत: उन्होंने मानस मंथरा नाम से एक महाकाव्य ही रच दिया। इसमें मानस तो महाकवि तुलसीदास के रामचरित का लिया और सर्वथा उपेक्षित पात्र मंथरा को नायक बनाकर नई कल्पना का सूत्रपात किया। इसकी प्रेरणा उन्हें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के साकेत महाकाव्य से मिली जो उपेक्षित पात्र लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को केन्द्र में रखकर लिखा गया।

डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा डॉ. भानावत को लोकभूषण सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। मेवाड़ पूर्व राजघराने के सदस्य डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ के हाथों प्रख्यात लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने 17 जून 2023 को लोकभूषण सम्मान ग्रहण किया। डॉ. भानावत को यह सम्मान उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा लोकसाहित्य एवं लोकपरम्परा से सम्बन्धित भारतीय लोकसाहित्य की विशिष्ट

सम्मान करते हुए | पुस्तकें भेंट करते हुए

दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के लिए दिया गया। डॉ. लक्ष्यराजसिंह ने सम्मान स्वरूप हिंदी संस्थान द्वारा प्रेषित दो लाख पचास हजार की धनराशि, ताम्रपत्र एवं शॉल भेंट की।

डॉ. लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि डॉ. भानावत कई सालों से लगातार भारतीय साहित्य के क्षेत्र में भारतभर में मेवाड़ का नाम रोशन करते आ रहे हैं, जिससे भावी पीढ़ी को जीवंत प्रेरणा मिलती है। महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन ने ही सबसे पहले 1984 में महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार दिया था। तब इस नाम से कोई पुरस्कार नहीं था पर फाउण्डेशन के संस्थापक महाराणा भगवतसिंह मेवाड़ ने डॉ. भानावत को सम्मानित करने के लिए इस पुरस्कार की घोषणा की और पहला पुरस्कार ही इन्हें प्रदान किया गया। मैं डॉ. भानावत के उत्तरोत्तर उत्कर्ष का हार्दिक विश्वासी हूं।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व डॉ. भानावत पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र से ढाई लाख के कोमल कोठारी सम्मान के अलावा विभिन्न संस्था-प्रतिष्ठानों से पांच बार इक्यावन हजार के पुरस्कार से नवाजे जा चुके हैं।

इस अवसर पर डॉ. भानावत ने अपनी 'निर्भय मीरां' तथा 'लोकदेवता वीर कल्लाजी राठौड़' पुस्तकें भेंट करते कहा कि मेवाड़ की दो ही विभूतियां ऐसी हैं जो पूरे विश्व में वन्दनीय हैं। उनमें मीरांबाई पर लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की कृपादृष्टि से मुझे उन छह प्रान्तों की यात्रा कराई जहां-जहां मीरां चित्तौड़ से चलकर अन्त में द्वारिका समुद्र समर्पित हुई। अच्छी बात यह रही कि जहां-जहां मीरां कृष्ण को ढूंढ़ती रही वहां-वहां हम उन सारे तीर्थों, धर्मस्थलों तथा वैष्णव मन्दिरों में मीरां को ढूंढ़ते रहे।

मीरां कल्लाजी की बुआ थी। कल्लाजी स्वयं ऐसे वीर महाबली थे जिन्होंने अकबर की सेना से युद्ध किया। मुंड गिरने पर भी रूंड से लड़ते, दुश्मनों का सफाया करते सलूम्बर के पास जिस स्थान पर प्राण विसर्जित किये वहां रूंडेड़ा गांव बसा। चित्तौड़ और रूंडेड़ा में तब से उनकी गादी लग रही है जहां परम्परा से गादीपति सेवक कल्लाजी के भाव में न्याय करते हैं। लोकार्पण अवसर पर डॉ. तुक्तक भानावत, लेकसिटी प्रेसक्लब अध्यक्ष कपिल श्रीमाली उपस्थित थे।

धर्मक्षेत्रे : यात्रा मथुरा-वृंदावन की (1)

-अर्थांक भानावत-

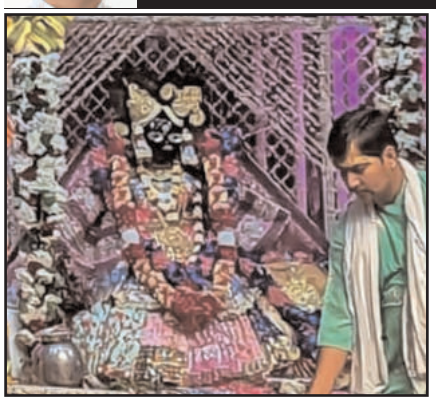

मथुरा-वृंदावन की यात्रा के शुरू होने से पहले ही हमें उत्तरप्रदेश के लक्षण महसूस हो चुके थे। रेल में बैठने के एकदिन पूर्व हमने ठहरने की व्यवस्था आसानी और आराम के लिए ऑनलाइन की लेकिन वो आदमी एक ठग निकला। इस परेशानी से निराश होकर पूरी यात्रा के बारे में ही दो-बार वापस विचार कर हमने घर से प्रस्थान किया। रेल का सफर आसान शब्दों में कहें तो रेल के सफर जैसा था। वही स्टेशन, वैसा ही तीसरी श्रेणी का ऐसी डिब्बा, वही टीसी और वही अरावली की वादियों का दृश्य जो हरबार उदयपुर से निकलते हुए दृश्यगत होता है। एक बहुत ही ठंडी रेल यात्रा को तय कर हम सुबह-सुबह साढ़े चार बजे मथुरा पहुंचे।

इस शहर को देख कर ऐसा लगा मानो इक्कीसवीं सदी से ज्यादा विकसित तो ये महाभारत के दौरान रहा होगा। पर एक बात जिसका मुझे आश्चर्य हुआ कि मथुरा में सुबह साढ़े चार बजे भी हलचल थी। सड़कों पर गाड़ियां थीं। भागते युवा और ठहाके लगाते बूढ़े मिले। टैक्सी कर हम श्रीकृष्ण जन्मष्ठमी आश्रम वृंदावन पहुंचे। वहां हमें पता चला कि हम अकेले नहीं जो इस तरह ठगे जा चुके हैं।

आश्रम के कर्मचारी के अनुसार तो यह ठग दिन के ढाई लाख रुपए तक छाप लेता है। एक और निराशा का सामना कर हमने उस आश्रम से प्रस्थान किया क्यूंकि वहां रहने की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी। उससे आगे के धाम में हम चारों ने कमरा लिया। इस पल तक मैं इस बात का अंदाजा लगा चुका था कि यह इस सफर की आखरी परेशानी नहीं होगी।

वृंदावन शहर में श्रीकृष्ण ने अपना बचपन बिताया। एक बात जो कृष्ण के बारे में महत्वपूर्ण है वो ये है कि कृष्ण के जीवन की दास्तान अस्पष्ट है। कृष्ण के जीवन का उल्लेख कई पुराणों में है, और सभी के किस्से कुछ सन्दर्भों में अलग हैं। श्री भागवत पुराण के अनुसार गोकुल में अपना बचपन बिताने के बाद कृष्ण वृंदावन इसीलिए आए क्यूंकि गोकुल में कंस ने अपने भांजे को मारने के लिए कई दानवों को भेजा। वहां के वरिष्ठ लोगों को लगने लगा कि अब यह गांव हमारे रहने के लिए असुरक्षित है, इसीलिए गोकुल के सभी लोगों ने वृंदावन नामक वन के लिए प्रस्थान किया और वहां एक नए कस्बे की स्थापना की।

सेवा सदन धाम के दरवाजों से निकलकर हम गए बांकेबिहारीजी के दर्शन करने। यह वृंदावन का सबसे प्रसिद्ध और भीड़ वाला मन्दिर है। हमने इसके दर्शन सुबह खुलते ही करने का विचार किया। एक छोटी बिजली से चलने वाली रिक्शा जिसे यहां टमटम कहा जाता है, एक अकेला ऐसा परिवहन है, जो वृंदावन के पुराने शहर, जहां पर ज्यादातर मन्दिर स्थापित हैं, वहां चलने दिया जाता है। इसी में हमने प्रस्थान किया। बांकेबिहारीजी के रास्ते में ही हमें इस संस्कृति के कई तत्व दिखे। भीड़ और पतली गलियों के कारण यहां ज्यादातर धर्मस्थलों के रास्ते पर्यटकों को पैदल ही तय करने पड़ते हैं।

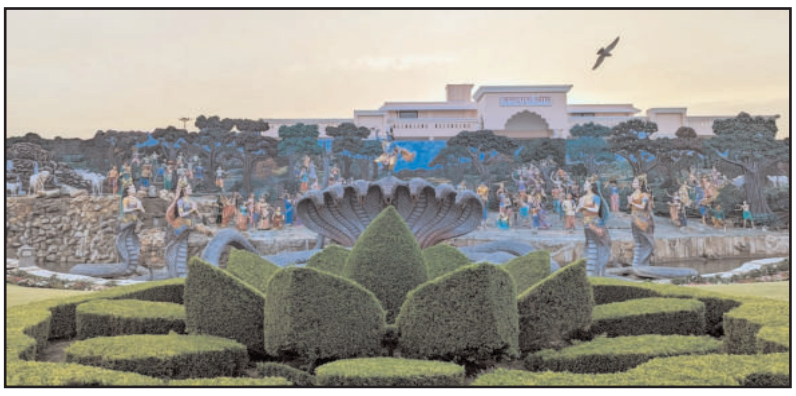

वृंदावन के बंदरों में इतनी मानसिक क्षमता है कि वो लोगों के चश्में चुराकर घरों के ऊपर चढ़ जाते हैं और वो तभी उन चश्मों को छोड़ते हैं जब आप कुछ खानपान की सामग्री उनकी तरफ फैंके। यह देखकर मैं चकित रह गया। एक तत्व और जो हमने देखा वो था ढोंग। ऐसे मन्दिर जहां जोर-जोर से गाने के नाम पर शोर किया जा रहा होता है और एक पंडित माइक्रोफोन पर दान की भीख मांग रहा है और लोग लीला के नाम पर शादी की बारात का नाच कर रहे हैं। इस ढोंग को देखकर भी हम उतने ही चकित हुए।

श्री बांकेबिहारीजी के मंदिर में श्रद्धा की अनुभूति हुई। हजारों लोगों की भीड़ सुबह 8 बजे कृष्ण के दर्शन करने के लिए वहां इकट्ठा थी और हम बस यह सोच रहे थे कि दिन के 3 बजे यहां कैसी परिस्थितियां होंगी। एक बात जो हमने हर मन्दिर में महसूस की वो थी व्यवस्था की कमी। एक कतार दिखना भी यहाँ मुश्किल था। हजारों लोग एक दूसरे को धक्का मारकर एक 5 फुट के द्वार में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे पर ऐसा वातावरण मुझे नहीं लगता पूरे विश्व में कहीं और हो। जैसे-तैसे अपनी मम्मी को हजारों लोगों के बीच में से बांकेबिहारीजी के चरणों तक लेजाकर हमने मनभावन दर्शन किये।

इसके बाद हम गए इस्कॉन मन्दिर। इस्कॉन एक ऐसा संस्थान है जो कृष्ण भावनामृत पर केंद्रित है। इनके हिसाब से कृष्ण एक भगवान नहीं बल्कि जीवन प्रतीत करने का एक तरीका है। इस्कॉन मन्दिर में हमें एक अलग प्रकार की शांति महसूस हुई। 'हरे रामा हरे कृष्णा' पर लोगों को भक्ति में लीन नाचते हुए देखकर हमसे रहा नहीं गया। इन अलग-अलग आध्यात्मिक स्थानों के दर्शन कर मुझे ये एहसास हुआ कि भक्ति में लीन होकर नाचना, रियाज करना, एक जगह बैठकर ध्यान करना, माला को गिन ना ये सब कुछ नहीं बस ध्यान करने के अलग रूप हैं। ये अलग रूप जिसमें अलग-अलग इंसान अलग-अलग तौर-तरीकों के अपने मन पर वश करने का प्रयास करते हैं।

कहा जाता है कि निधिवन के तुलसी के पेड़ रात में गोपियों का रूप धारण कर रासलीला करते हैं। इन पेड़ों की खाल खोकली होने और जमीन की सतह सूखी होने के बावजूद ये पेड़ हमेशा हरी पत्तियों से लदे रहते हैं। हर तुलसी का पेड़ एक जोड़ी में पाया जाता है और ये कृष्ण और गोपी की जोड़ी मानी जाती है। आजतक किसी भी जीवित प्राणी ने निधिवन में रात नहीं बिताई। इंसान तो छोड़ों, बंदर और पक्षी तक सूर्यास्त के बाद निधिवन में नहीं पाए जाते जबकि इस क्षेत्र में घने और हरे पेड़ों की प्रचुरता है। इस अद्भुत इतिहास को जानकर मुझे उतना ही बुरा लगा जब मैने देखा कि बाइसवीं सदी ने इस जगह को श्रद्धा के नाम पर पैसे ऐंठने की एक मशीन में बदल दिया है। मन्दिर में मूर्तियों से ज्यादा अलग-अलग प्रकार के श्रृंगार (दान) की कीमतें दिख रही थीं। यह सब देखकर हम काफी निराश हुए। निधिवन की 500 मीटर की पदयात्रा कर हमने वहां के सभी मन्दिर देखे। लोगों को निधिवन के पेड़ों की जड़ों से मिट्टी निकालकर प्रसाद की तरह भरते देख हमें काफी आश्चर्य हुआ।

कुछ समय विश्राम कर हम प्रेम मन्दिर पहुंचे। प्रेम मन्दिर वृंदावन के सबसे प्रसिद्ध मन्दिरों में माना जाता है। जगद्गुरु श्री कृपालु महाराज एक सुप्रसिद्ध हिन्दू आध्यात्मिक गुरु एवं वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनके कई मन्दिर

हैं, जिनमें से एक प्रेम मन्दिर है। इस मन्दिर में प्रवेश करते ही हमें ऐसा महसूस हुआ कि हम एक अलग दुनिया में आ गए हैं। कृष्ण के जीवन की कहानियां यहां मूर्तियों के रूप में चित्रित हैं। मन्दिर के अंदर जाकर एक भव्य अनुभूति हुई। जटिल लोगों का एक झुण्ड राधे-राधे की धुन में मन्दिर परिसर का चक्कर लगा रहा था। एक बड़े से स्क्रीन पर कृपालु महाराज के उपदेश चलाए जा रहे थे जो पूरे मन्दिर परिसर में सुनाई दे रहे थे। इस प्रकार हमने कृष्ण की लीला में अपना पहला दिन व्यतीत किया और मथुरा अगली सुबह प्रस्थान करने के लिए तैयारी की।

- क्रमशः

देवता का रूठना, मनना और गोळ पहनाना

– डॉ. तुक्तक भानावत –

भारत देश धर्म और अध्यात्म प्रधान देश है। यहां कोई गांव, घर और जन-मन ऐसा नहीं मिलेगा जो देवीशक्ति, पराशक्ति में विश्वास नहीं रखता हो। पूरी प्रकृति ही देवमय है तो उसके साथ रहने वाला पुरुष भी देवत्व का ही तत्व है। कदम-कदम पर ऐसे देवत्व के दर्शन, उनके स्थान, मन्दरी, देवरे, आल्ये-खाल्ये, कांकड़-धांकड़, चौरे-चबूतरे, पाट-खोदरे मिलेंगे। देवता भी अनाम, अनगड़, कोई प्रस्तर तो कोई काष्ठ के रूप-अरूप में खुले-धुके मिलेंगे।

इनके स्थान पर कोई धूप बाती करता मिलेगा तो कोई साफ सफाई। कोई हजूरिया, कोई भोपा, कहीं शनिवार तो कहीं रविवार और कहीं किसी दूसरे दिन जागता करता मिलेगा। दूर-पास के जातरी अपनी हर तरह की शारीरिक, मानसिक या इतर लोक की समस्या से निजात पाने उपस्थिति देता देखा जाएगा।

बागवान मांगीलालजी मेघवाल उदयपुर के पास के पुराने गांव मेणार के रहने वाले हैं। वे उदयपुर में बारी-बारी से सप्ताह में एक दिन उन कुछ परिवारों के पेड़-पौधों की सार-सम्भाल करने जाते हैं। मेरे यहां हर शुक्रवार को आते हैं।

उन्होंने बताया कि उनका बड़ा शादीशुदा लड़का भूपाल पिछले पांच-सात माह से गुमसुम रहने लगा। घरवालों से, मित्रों से किसी से कोई बातचीत नहीं करता।

किसी से कोई बोलचाल याकि लड़ाई-झगड़ा भी नहीं हुआ। किसी ने किसी प्रकार की धमकी भी नहीं दी। उसने किसी से कोई उधारी भी नहीं की।

मांगीलालजी कई जगह समझेबूझों के पास गये। देव-देवरे धोके पर कोई माकूल जवाब नहीं मिला। घरवाले, सगेसमधी सब भारी परेशानी से दुःखी रहने लगे। उन सबका जीना ही दूभर हो गया। भूपाल की नौकरी भी गई और हमारा धंधा भी चौपट हो गया। कहीं जी नहीं लगे। दस-पन्द्रह हजार बर्बाद हो गये।

एकदिन मांगीलालजी को ध्यान आया कि कभीकभाक वे वल्लभनगर के बांसड़ा गांव के कांकश श्याम बावजी के वहां जाया करते थे। वहां उन्हें अनेक समस्याओं से निजात मिली और सन्तोष हुआ। यह सोच वे शनिवार को वहां चौकी पर चले गये।

भोपे को भाव आ रहे थे। मांगीलालजी ने नीम के पत्ते की बावजी की प्रतिमा के ऊपरी सिरे पर पाती चढ़ाई और दो कागज की परची बनाई। मूर्ति के नीचे एक ओर वाली पर लिख दिया मेरा धारा काम हो जाय तो पाती इधर गिरना। दूसरी ओर की परची पर लिख दिया, मेरा काम नहीं हो तो पाती इधर गिरना। इतने में काम होने वाली ओर पाती गिरी। मांगीलालजी बड़े खुश हुए।

बावजी ने भोपाजी के डील में भाव में बताया कि बड़े छोकरे की शादी के पूर्व गोळ की रस्म करनी थी। मांगीलालजी बोले, अन्दाता, कोरोना का समै था सो सम्भव नहीं था। माफ करो और कोई रास्ता निकालो ताकि घर में शान्ति आये।

बावजी ने कहा कि भूल्ये की भी सजा भुगतनी होगी। दोनों टाबरों को अब तांबे की गोळ, भैरूजी की बींटी पहनानी होगी। इस बाबत सारी जानकारी भैरूजी के थानक पर जाकर करना। वे ही आगे का रास्ता बतायेंगे। गोळ नहीं पहनने से भैरूजी रूठ जाते हैं और परिवार में बड़ा अनर्थ कर देते हैं। उन्हीं के कारण अपनी भूलचूक से मांगीलालजी को परेशानियों से गुजरना पड़ा।

उन्होंने 05 जून 2023 का मुहूर्त निकलवाया। यह बात धीरे-धीरे सब ओर फैली तो सबने खुशी जाहिर की कि चलो, अच्छे दिन आये। सब बावजी की जैजैकार करने लगे। अपने समाज के मोतबीरों और घर के बड़े बड़ेरों से सलाह मशविरा किया तो यह बात भी सामने आई कि कोरोना के कारण किसी को वैवाहिक जीमण नहीं दिया सो समाजजन उसका भी आग्रह करने लग गये।

सो 05 जून से पूर्व 04 जून संध्या को विवाह का सामूहिक भोज रखा गया। मांगीलालजी की जाति वालों के 100 घर हैं सो उनके लिए मिठाई और दाल-पूड़ी का भोजन रखा गया। दूसरे दिन प्रातःकाल गोळ का भोजन लड्डू-बाटी का बावजी को भोग देकर परिजनों तथा सगेसमधियों को आमंत्रित कर जिमाया गया।

भोपाजी को पेरावणी में पूरी पोशाक धोती, कमीज, पगड़ी तथा गोळ वाले भैरूजी के भोपे तथा हजूरिये को पेरावणी दी गई। शेष जो समधी और बच्चों के सुसराल वाले पेरावणी लाये उन्हें यथायोग्य कपड़ेलत्ते और विशिष्ट जनों में 300 को पगड़ी धारण कराई गई।

इस प्रकार कुल मिलाकर एक लाख बीस हजार रूपये खर्च हुए। इसमें मांगीलालजी ने अपनी दोनों लड़कियों को पेरावणी भी कर दी। सारा जो भी काम बाकी था लेनदेन का वो सब कर दिया। अब भूपाल की तबीयत ठीक है। पहले की तरह सबसे हेलमेल रखने लग गया है। छोटा लड़का पुष्कर भी अच्छी स्थिति में है।

गोळ भैरूजी के नाम की होती है सो गोळ सम्बन्धी सारे संस्कार भैरूजी के देवरे में होते हैं। गोळ परिवार का सबसे बड़ा लड़का धारण करता है। उसको आजीवन शराब तथा मांस का त्याग करना होता है। संयमी जीवन जीना होता है। जरा सी चूक पर देवता चमत्कार बताकर संकट खड़ा कर देते हैं। मांगीलालजी के पिता भी साधु थे सो घर में शुचिता और सात्विकता ही रही। वे सत्संगी थे सो भजन भाव तथा सेवा-पूजा में ही अपना समय व्यतीत करते। उन्होंने मांगीलालजी को भी वैसे ही संस्कार दिये सो उनकी मृत्यु के बाद दोनों को समाधि दी। होली-दीवाली वे समाधि स्थल पर जाकर धूपध्यान कर उन्हें नमन करते हैं।

गोळ के साथ कच्चे धागे की बनी वेळ जिसे जनेऊ कहते हैं, धारण करनी पड़ती है। यह हल्दी रंग में रंगने के कारण हल्दिया रंग की पीली होती है। सूतक लगने या मौत मरण में जाने पर इसे बदल कर दूसरी धारण करनी पड़ती है। ब्राह्मणों के जनेऊ सफेद होती है।

अनिशा को पीएच.डी.

बीकानेर (ह. सं.)। संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा ने विधि संकाय की अनिशा जैन को 'राजस्थान के टैक्सटाइल उद्योग में कार्यरत प्रवासी महिला कामगारों के मानवीय अधिकारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन-भीलवाड़ा जिला के विशेष सन्दर्भ में' विषय पर पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की। अनिशा ने यह शोधकार्य डॉ. वी. डी. भटनागर के निर्देशन में किया। अनिशा वर्तमान में अमेरिका से डेटा साइंस में एम.बी.ए. कर रही है। अनिशा विकल्प की पत्नी और डॉ. कविता-डॉ. सतीश मेहता की पुत्रवधू है।

याहू! बच्चों के लिए खुशखबरी : उदयपुर में शुरू हुआ सबसे बड़ा सॉफ्ट प्ले एरिया

उदयपुर (ह. सं.)। शहर में बच्चों के इंडोर खेलने-कूदने की जगह की कमी को पूरा करते हुए हाल ही में नवरतन काम्प्लेक्स में 'याहू' सॉफ्ट प्ले एरिया का उद्घाटन हुआ। यहां पर 2 से 15 साल तक के बच्चे एयर कंडीशंड एवं सुरक्षित माहौल में खेल सकते हैं।

याहू सॉफ्ट प्ले एरिया की संस्थापिका नूपुर गोयल ने बताया कि प्रतिदिन सुबह 11 से रात 9 बजे तक सॉफ्ट प्ले एरिया ओपन रहता है। हमने मंथली पास का भी सिस्टम शुरू किया है। माता-पिता कुछ घंटों के लिए अपने बच्चों को यहां पर छोड़कर भी जा सकते हैं।

नुपुर बताती है कि 2300 स्क्वायर फीट में फैला हुआ याहू, उदयपुर का सबसे बड़ा इंडोर प्ले एरिया है जो 2 फ्लोर्स पर फैला हुआ है। याहू में बच्चों के लिए एक दर्जन से ज्यादा एक्टिविटीज हैं जैसे सॉफ्ट प्लेजोन, एयर गन, मंकी बार, टनल, ब्रिज, स्लाइड, स्पाइरल, स्विंग, राउंट अबाउट, वॉल्फ गैंग, टॉडलर्स एरिया, बॉल पूल, लेगो बोर्ड, बॉक्सिंग पंच, बास्केटबॉल, ट्रेमपोलिन, क्लाइंबिंग वॉल, रोप क्लाइंबिंग, फोम पिट। नुपुर गोयल ने बताया कि एक कैफिटेरिया भी है जहां पर बच्चे स्वादिष्ट व्यंजनों का सेवन कर सकते हैं। याहू पर सुरक्षा की दृष्टि से फर्स्ट एड किट, सीसीटीवी मॉनिटर, और फ्री वाई फाई जैसे सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

चित्रकला की स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। यहां के राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय द्वारा अगले सत्र से चित्रकला विभाग द्वारा पी.जी. क्लासें प्रारम्भ हो जायेंगी। इसके लिए पिछले कई वर्षों से अनेकबार स्थानीय सांसदों, विधायकों तथा अन्यान्य संगठनों ने भी लगातार मांग करते सरकार से आग्रह किया पर सफलता हाथ नहीं लगी।

इसबार जब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत उदयपुर प्रवास पर आये तो महाविद्यालय की छात्राओं ने उनसे भेंट कर पुरजोर शब्दों में यह मांग दोहराई कि पी. जी. कक्षाओं के अभाव में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राएं आगे अध्ययन नहीं कर पाती हैं। मुख्यमंत्री ने छात्र प्रतिनिधियों की बातों पर गौर करते हुए मात्र आध घण्टे में ही शिक्षा निदेशालय से अगले सत्र से चित्रकला की पी. जी. कक्षाएं प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान करवायीं।

इसका श्रेय महाविद्यालय की प्रिंसिपल डॉ. मीना वया को दिया जा रहा है जो इसी महाविद्यालय में छात्रा रूप में अध्ययन कर चित्रकला विभाग की व्याख्याता बनीं। वे स्वयं प्रख्यात चित्रकार हैं। शब्द रंजन की बधाई।

रश्मि पगारिया को नारी रत्न सेवा सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। इनरव्हील क्लब ऑफ उदयपुर ने समाजसेवा में उत्कर्ष कार्य करने पर इनरव्हील क्लब की प्रेसिडेंट रश्मि पगारिया को नारी रत्न सेवा सम्मान प्रदान किया। सेक्रेटरी सीमा चंपावत ने बताया कि पीडीसी चंद्रप्रभा मोदी, एडवाइजर्स शीला तलेसरा, पुष्पा कोठारी, आईपीपी अंजू माहेश्वरी ने यह सम्मान गत दो सालों में महिला सशक्तिकरण पर 400 से अधिक सेवा कार्य करने हेतु दिया। वाइस प्रेसिडेंट स्वीटी छाबड़ा, ट्रेजरर बेला जैन, आईएसओ रेखा जैन, एग्जीक्यूटिव मेंबर आशा तलेसरा, चंद्रकांता मेहता, निधि जैन तथा 150 मेंबर की उपस्थिति में दिया गया।

सेवानिवृत जनसंपर्क अधिकारी गोपाल वैष्णव का निधन

उदयपुर (ह. सं.)। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी जिले के वरिष्ठ पत्रकार गोपालप्रसाद वैष्णव का 22 जून को निधन हो गया। दिवंगत वैष्णव ने सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय उदयपुर में सहायक जनसम्पर्क अधिकारी, बांसवाड़ा कार्यालय में जनसम्पर्क अधिकारी व उदयपुर के आबकारी विभाग में जनसम्पर्क अधिकारी के पद सहित अन्य स्थानों पर सेवाएं दी। शहर के वरिष्ठ पत्रकारों एवं जनसम्पर्क विभाग के अधिकारी-कार्मिकों ने वैष्णव के निधन पर संवेदनाएं व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। शब्द रंजन की शोकांजलि।

मुर्रा नस्ल का भैंसा 'राजा' बना आकर्षण का केन्द्र

उदयपुर (ह. सं.)। संभाग स्तरीय किसान महोत्सव दौरान प्रदेश के चुरू जिले की राजगढ़ तहसील अंतर्गत

बिलसाण के पशुपालक पवन कुमार का 'राजा' नामक विशाल भैंसा आगंतुक किसानों व पशुपालकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। पवन कुमार ने बताया कि लगभग 13 क्विंटल वजनी यह भैंसा मुर्रा नस्ल का है और इसकी ऊंचाई 5 फीट 8 इंच है। दिनभर यहां पर हजारों पशुपालकों ने इस भैंसे को देखने और इसकी विशेषताओं को जानने में रूचि दिखाई।

आर्ची आर्केड में नव्य नांगल

उदयपुर (ह. सं.)। न्यू भूपालपुरा स्थित आर्ची आर्केड में डाक्टर दंपत्ति अनिल-कुसुम शर्मा के सुपुत्र डाक्टर दंपत्ति धवल-नेहा के नवनिर्मित गृह का 24 जून को नांगल संस्कार हुआ। यह घर न केवल दर्शनीय अपितु नव्य-भव्य परिकल्पनाओं से सम्पोषित परम्पराशील प्रयोगधर्मिता की ठाठ ठसक देता अजब-गजब का मनहर म्युजियम ही है।

आर्ची आर्केड की नवमीं-दसवीं मंजिल को सेतुमय स्वरूप देते बांस की छत, तारों पर सन की रस्सी की कसी, बेंत की बुनावट में झांकती अलमारियों का आलोक तथा बांस की झूलनी में हालरहुलर दीपक का प्रकाश एक नई आभा देते सकारात्मक ऊर्जा का हलरावण लगते हैं। इस अवसर पर भानावत कुटुम्ब के डॉ. महेन्द्र भानावत तथा डॉ. तुक्तक-रंजना भानावत ने डाक्टर दंपत्ति को बधाई देते काष्ठ निर्मित चल मन्दिर कावड़ भेंट की।

कबाड़े से कंचन की कार्यशाला

उदयपुर (ह. सं.)। राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय, उदयपुर में 1 से 7 जून तक चित्रकला विभाग द्वारा राष्ट्रीय कला कार्यशाला आयोजित की गई। समापन समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि ऐसे आयोजन प्रत्येक कॉलेज में होने चाहिएं ताकि वहां अध्ययनरत युवक-युवतियों को वेस्ट से बेस्ट का बेहतरीन उपयोग करने की प्रेरणा मिल सके।

विशिष्ट अतिथि प्रो. सुरेश शर्मा, प्रो. शैल चोयल, प्रो. एल. एल. वर्मा ने ऐसी कार्यशाला की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए अपने उद्बोधन में उदयपुर के लिए एक धरोहर बताया। आयोजन सचिव डॉ. रामसिंह भाटी, विभागाध्यक्ष प्रो. दीपक भारद्वाज, प्रो. कहानी भानावत, प्रो. मनीषा चौबीसा एवं डॉ. दीपक सालवी ने अपने संस्मरण सुनाये।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस कार्यशाला में ख्यात कलाकार विशाखापट्टनम से अप्पाला राजू, इन्दौर से कपिल अग्रवाल तथा स्थानीय शिल्पकारों में सर्वश्री दिनेश उपाध्याय, राकेश कुमार एवं पुष्पकान्त त्रिवेदी ने भाग लिया। इन कलाकारों ने पूरे मनोयोग से रात-दिन एक कर वर्षों से पड़ी अनुपयोगी सामग्री से बेहतरीन उपयोगी कर जो निर्मितियां तैयार की वे वर्षों तक महाविद्यालय परिवार को दर्शनीय बनाती रहेंगी।

बाजार / समाचार

एचडीएफसी लि. का एचडीएफसी बैंक में विलय

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक, भारत में निजी क्षेत्र के प्रमुख बैंक ने शुक्रवार से सभी अपेक्षित शेयरधारक और नियामक अनुमतियां प्राप्त होने के बाद, भारत की प्रमुख हाउसिंग फाइनेंस कंपनी एचडीएफसी लि. और एचडीएफसी बैंक के साथ विलय के सफल समापन की घोषणा की। एचडीएफसी बैंक और एचडीएफसी लिमिटेड ने अपेक्षित सहमति और अनुमोदन प्राप्त करने के संदर्भ में 4 अप्रैल 2022 को संयुक्त तौर पर विलय के निर्णय की घोषणा की थी और इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए 15 से 18 महीने की समय सीमा का संकेत दिया था। दोनों कंपनियों के बोर्ड ने अपनी-अपनी बैठकों में यह निश्चय किया कि दोनों कंपनियों का विलय 1 जुलाई 2023 से प्रभावी होगा।

विलय की गई इकाई अन्य बातों के साथ-साथ दोनों संस्थाओं के बीच मौजूद महत्वपूर्ण पूरकताओं को एक साथ लाती है और बढ़े हुए पैमाने, व्यापक उत्पाद की पेशकश, बैलेंस शीट लचीलेपन से संबंधित ग्राहकों, कर्मचारियों और दोनों संस्थाओं के शेयरधारकों सहित विभिन्न हितधारकों के लिए सार्थक मूल्य बनाने के लिए तैयार है। इसके साथ ही बेहतर आय के अवसरों, परिचालन क्षमता और सहभागिता क्षमता में तालमेल बिठाने की क्षमता भी बेहतर होगी। विलय योजना के अनुसार शेयर एक्सचेंज अनुपात के अनुसार, एचडीएफसी बैंक 2/-रुपए अंकित मूल्य वाले, पूरी तरह से पेड-अप एचडीएफसी लिमिटेड के प्रत्येक 25 शेयर्स के शेयरधारकों को एक रुपये के अंकित मूल्य के 42 नए इक्विटी शेयर जारी और आवंटित करेगा।

टेलीकॉम आउटरीच कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। दूरसंचार विभाग नई दिल्ली के निर्देशानुसार कार्यालय नियंत्रक संचार लेखा, जयपुर द्वारा टेलीकॉम आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

राजस्थान आईएसपी एसोसिएश के अध्यक्ष हेमन्त शेखर श्रीमाली ने बताया कि आयोजन हरिप्रसाद मीणा, महाप्रबन्धक, बीएसएनएल के सौजन्य से कान्फ्रेंस हॉल, कार्यालय जनरल मैनेजर बीएसएनएल, उदयपुर में किया गया।

कार्यक्रम में श्रीमती वंदना गुप्ता, प्रधान नियंत्रक, संचार लेखा मुम्बई की गरिमामयी उपस्थिति रहीं। श्यामलाल मीणा, नियंत्रक संचार लेखा, जयपुर ने बताया कि कार्यक्रम में इंटरनेट सर्विस उपलब्ध करवाने वाले विकेन्द्रीकृत लाइसेंसधारियों को आने वाली समस्याओं पर विचार विमर्श किया तथा उनके त्वरित समाधान दिये गये। इसके अतिरिक्त, लाइसेंसधारियों को विभाग के नियमों की अनुपालना के सम्बन्ध में आवश्यक दिशानिर्देश दिये। कार्यक्रम के दौरान लाइसेंसधारियों से सेवाओ को और बेहतर करने के लिये फीडबैक भी लिये गये। इसके अतिरिक्त दूरसंचार विभाग के पेंशनरों को पहचान पत्र का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर भवानीसिंह मीणा लेखाधिकारी राजस्व, राजकुमार मीणा लेखाधिकारी (राजस्व), कैलाशचन्द गुर्जर सहायक लेखाधिकारी (पेंशन) सहित कई गणमान्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जेके ऑर्गेनाइजेशन ने आयोजित किए रक्तदान शिविर

उदयपुर (ह. सं.)। विगत 138 वर्षों से भारत के प्रसिद्ध औद्योगिक समूह जेके ऑर्गेनाइजेशन ने समूह के पूर्व प्रेसिडेंट हरिशंकर सिंघानिया की 90वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इन रक्तदान शिविरों का आयोजन समूह के स्वामित्व वाले विभिन्न कार्यालयों और विनिर्माण सुविधाओं में किया गया था। पद्म भूषण प्राप्तकर्ता हरिशंकर सिंघानिया ने समूह में कई नए उद्यमों को आरंभ करने और एकीकृत करने के साथ ही कई नए उपक्रमों की स्थापना करके जेके संगठन के विस्तार और एकीकरण में सक्रिय रूप से योगदान दिया।

जेके ऑर्गेनाइजेशन के चेयरमैन भरतहरि सिंघानिया ने कहा कि ऑर्गेनइजेशन एक सदी से भी अधिक समय तक अपने स्थान पर सुदृढतापूर्वक रहा है, जो अब हर किसी के लिए जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। श्री हरिशंकर सिंघानिया की जन्म जयन्ती के अवसर पर, जेकेओ ग्रूप की कंपनियों में आयोजित रक्तदान शिविर में 5712 कर्मचारियों ने रक्तदान किया।

नवजात शिशु के खाने की नली का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक नवजात शिशु के खाने की नली का जटिल ऑपरेशन सफलतापूर्वक किया है।

पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा ने बताया कि अम्बामाता निवासी ने अपने नवजात शिशु को पिम्स हॉस्पिटल में भर्ती कराया। शिशु मात्र 2 किलोग्राम का था व ट्रेकियो इसोफेजियल फिस्टूला नामक बीमारी से ग्रस्त था। इस बीमारी में खाने की नली पूरी तरह से विकसित नहीं होती व श्वांस नली में खुलती है। यह बीमारी 3000-4000 नवजात में से किसी एक को होती है। लगभग साढ़े तीन घंटे चले ऑपरेशन में खाने की नली को जोड़ा गया। ऑपरेशन के बाद तीन दिन तक शिशु वेंटिलेटर पर रहा। शिशु अब पूर्ण रूप से स्वस्थ है व उसे डिस्चार्ज कर दिया है। डॉ. मिश्रा ने बताया कि ऑपरेशन पिम्स हॉस्पिटल में नियमित रूप से होते रहते हैं पर खतरे और जटिलता को देखते हुए हर सफल ऑपरेशन एक उपलब्धि है। इस पूरी प्रक्रिया में पीडियाट्रिक विभाग के डॉ. विवेक पाराशर, डॉ. अंकित, डॉ. राहुल व डॉ. प्रागी तथा निश्चेतना विभाग के डॉ. अमित, डॉ. हार्दिका व नर्सिंग स्टाफ प्रदीप, राशी, शिव व रेखा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशिष अग्रवाल ने बताया कि शिशु का पूरा उपचार राज्य सरकार की मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत निःशुल्क हुआ है। उन्होंने बताया पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा सभी नवीनतम सुविधाओं से सुसज्जित है व उदयपुर संभाग में चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

24 तीर्थंकरों के नाम पर पौधारोपण

उदयपुर (ह. सं.)। रेड क्रॉस सोसाइटी एवं णमोकार संस्थान द्वारा उदयपुर के परशुराम चौराहे से लेकर वशिष्ठ चौराहे तक पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सुभाषचंद्र मेहता परिवार द्वारा 24 तीर्थंकरों के नाम पर पौधे लगाए गए। इसके अलावा डॉ. कहानी मेहता, जितेन्द्र मेहता, युक्ता मेहता, काव्या मेहता स्व. बालचंदजी मेहता, कमला मेहता के नाम के भी पौधे लगाए गए। पौधों को बड़ा होने तक इनकी देखभाल की जायेगी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा, गजेंद्र भंसाली, सुनील गांग थे। जिला कलेक्टर ने कहा कि णमोकार सेवा संस्थान पौधारोपण के क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा है। शहर में कई जगहों पर णमोकार संस्थान द्वारा पौधारोपण किया गया है और वे पौधों की देखभाल भी अच्छी तरह कर रहे हैं।

- सुभाषचंद्र मेहता

जिंक फुटबॉल अकादमी के 10 खिलाड़ी राष्ट्रीय ट्रायल के लिए चयनित

उदयपुर (ह. सं.)। जिले के जावर में हिंदुस्तान जिंक की जिंक फुटबॉल अकादमी के दस उभरते फुटबॉल खिलाड़ियों को राष्ट्रीय ट्रायल के लिए चुना गया है। भारत अगले साल की सैफ चैम्पियनशिप के लिए राष्ट्रीय टीम तैयार करना चाहता है। जावर स्थित अकादमी के दस में से आठ खिलाड़ी - एमडी. कैफ, पुनीत कुमार, संचित वार्ष्णेय, हिमेश मीना, मानवेंद्र सरवैया, प्रेम हंसदक, जितेंद्र कुमार और हिमांशु को अंडर-16 आयु वर्ग में चुना गया है, जबकि दो अन्य खिलाड़ी - मोहम्मद रियाज और विश्वजीत सारेन अंडर-20 ट्रायल में हैं।

हिंदुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने कहा कि हमने राजस्थान में जमीनी स्तर की फुटबॉल प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए जो बीज बोया था, वह हमारे जिंक फुटबॉल के होनहार लड़कों की राष्ट्रीय ट्रायल के लिए शॉर्टलिस्ट होने की इस उपलब्धि के साथ फल दे रहा है। यह जिंक फुटबॉल अकादमी के लिए गर्व का क्षण है।

अकादमी के मुख्य कोच तरुण रॉय ने कहा कि हमारा लक्ष्य भारतीय फुटबॉल की बेहतरी में सकारात्मक योगदान देने के लिए जमीनी स्तर पर अपने निरंतर प्रयासों को जारी रखना है। पिछले साल, गोलकीपर साहिल पूनिया सैफ चैम्पियनशिप जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले पहले जिंक फुटबॉल अकादमी खिलाड़ी बने। साहिल भारत की अंडर-17 टीम के प्रमुख खिलाड़ी बन गए हैं और वर्तमान में थाईलैंड में एएफसी एशियन कप में खेल रहे हैं।

वेदांता स्पार्क का सीआईआई से एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता लि. ने अपने वैश्विक कॉर्पोरेट नवाचार, गतिवर्धक एवं उद्यम कार्यक्रम, वेदांता स्पार्क के तहत् भारतीय उद्योग परिसंघ के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर इनोवेशन, एंटरप्रेन्योरशिप और स्टार्टअप्स सीआईआई आईसीआईइएस के साथ एमओयू साइन किया है।

हिंदुस्तान जिंक लि. की चेयरपर्सन और गैर-कार्यकारी निदेशक, वेदांता लि. प्रिया अग्रवाल हेब्बर, ने कहा कि सीआईआई सीआईईएस के साथ वेदांता की भागीदारी इनोवेटिव स्टार्टअप्स को हमारे अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र में अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और विकसित करने में सक्षम बनाएगी। वेदांता स्पार्क उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर ऐसे समाधान खोजने के लक्ष्य के साथ अपने परिचालन में मूल्य वितरण लाने के लिए तत्पर है जो दीर्घकालिक पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक स्थिरता में योगदान देगा।

सीआईआई सीआईईएस के अध्यक्ष और इंफोसिस के सह-संस्थापक क्रिस गोपालकृष्णन ने कहा कि वेदांता स्पार्क के कार्यान्वयन भागीदार के रूप में, सीआईआई सीआईईएस इस अभूतपूर्व पहल में वेदांता के साथ सहयोग के लिए उत्सुक है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि बड़े उद्योगो और स्टार्ट-अप्स की शुरूआत, नवाचार और सस्टेनेबल विकास के लिए अनूठे अवसर प्रदान करता है। सीआईआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर इनोवेशन, एंटरप्रेन्योरशिप और स्टार्ट-अप के निदेशक वरुण अखनूर और हिंदुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा ने एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। इस माह की शुरुआत में, वेदांता स्पार्क ने डिजिटल प्रौद्योगिकी आधारित नवाचारों को अपनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार और नैसकॉम के सीओई के साथ अपने सहयोग की भी घोषणा की थी।

विक्रमादित्य रैकेटलॉन में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

उदयपुर (ह. सं.)। शहर के विक्रमादित्य चौफला को तीसरी बार रैकेटलॉन विश्व चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। यह चैंपियनशिप 2 से 6 अगस्त 2023 तक विक्टोरिया, रॉटरडैम (नीदरलैंड) में खेली जाएगी।

पिछले साल टीम ने रैकेटलॉन के इतिहास में पहली बार द नेशन्स कप में स्वर्ण पदक जीता था। फील्ड क्लब सदस्य विक्रमादित्य राजस्थान के उन दो खिलाड़ियों में से एक हैं जिन्होंने 2012 में दक्षिण कोरिया (ग्वांगजू) में आयोजित वर्ल्ड यूनिवर्सिटी बैडमिंटन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

पिडिलाइट का उपभोक्ता जागरूकता अभियान

उदयपुर (ह. सं.)। पिडिलाइट, कंस्ट्रक्शन और स्पेशिलिटी कैमिकल्स के प्रमुख निर्माता ने टाइल फिक्सिंग के लिए पुराने विकल्पों की बजाए अपने प्रभावी टाइल फिक्सिंग एडहेसिव ब्रांड रॉफ की 'मगर की जकड़' जैसी मजबूती को लेकर नया उपभोक्ता जागरूकता अभियान शुरू किया है। ये कैम्पेन सीमेंट सहित पारंपरिक टाइल फिक्सिंग प्रोसेस के परिणामस्वरूप टूटी हुई टाइलों, डिबॉन्डिंग, गिरने वाली टाइलों और ऊबड़-खबड़ लगी टाइलों के साथ ग्राहक की हताशा को भी सामने लाएगा। इसमें साफ दिखाया गया है कि गलत टाइल लगाने के कारण ग्राहक लगातार परेशानियों का सामना करता है। पिछले कुछ दशकों में टाइलों के उपयोग में काफी तेजी से बदलाव आया है, और पारंपरिक टाइल फिक्सिंग विधियों का पालन करना आज के ग्राहकों की उभरती जरूरतों के अनुरूप नहीं हो सकता है।

इसके अलावा, अधिकांश अन्य फिक्सिंग एजेंट पानी से सुरक्षित होते हैं और उनमें नमी काफी तेजी से वाष्पीकरण होकर उड़ जाती है। नतीजे में वे जल्दी टूट जाती है और मौसम में लगातार बदलाव के चलते वे अपनी पकड़ खो देते हैं और उखड़ने लग जाते हैं। हालांकि, रॉफ एडहेसिव्स मौसम के अनुसार कैमिकली रिएक्ट करते हैं और इसलिए वे मौसम में आने वाले बदलावों से भी प्रभावित नहीं होते हैं।

सुधांशु वत्स, डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर, पिडिलाइट इंडस्ट्रीज लि. ने कहा कि पिडिलाइट, हमेशा से ही तेजी से विकसित होती नई कैटेगरीज में नए उत्पादों को लाकर लीडरशिप हासिल करता है और ये कंपनी की कोर वैल्यू है। इसके चलते हुए पिडिलाइट लगातार आगे बढ़ रही है। हमारे ब्रांड रॉफ का उद्देश्य भारत में टाइल्स लगाने के तरीके को बदलना है।

यात्रावृत्त : बीकानेर में बारह दिन (5)

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

कौशल दुग्गड़ की सेवाभावी संहिता :

कौशल दुग्गड़

यहां के कौशल दुग्गड़ का युवा-समाजसेवी के रूप में सुचर्चित नाम है। उनके भ्राता सुन्दरलालजी दुग्गड़ ने ही 5 करोड़ के सहयोग से भव्य समताभवन का निर्माण कराया। वे बिना किसी प्रसिद्धि की चाहना लिए ऐसे सामाजिक कार्यों के लिए आगे रहते हैं। कौशल भी उन्हीं संस्कारों से पल्लवित लगे।

वे सतीशजी से जैन कॉलेज में पढ़ चुके हैं। सामाजिक सरोकारों एवं जीवनधर्मी व्यवहारों को वे बड़े अदब से जीते हैं। कौशलजी साधुमार्गी जैन संघ गंगाशहर-भीनासर के अध्यक्ष हैं। भीनासर में वे नया समताभवन बनवा रहे हैं। समाज के श्रेष्ठत्व के लिए वे बहुत कुछ करने की तड़फ लिए हैं। राजनीति से दूर वे जमीनी स्तर पर अनेक आवश्यक एवं उपयोगी कार्यों को मूर्तरूप देने के लिए गम्भीर संकल्पित लगे। चाय पर बड़ी देर तक उनसे हमारी हमझोली रही।

सेठिया पारमार्थिक संस्था एवं संत दर्शन :

ठठेरा बाजार स्थित अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था भी हमारा जाना हुआ। यहीं रहकर मेरे साथ कानोड़ के अन्य साथियों ने भी रामपुरिया कॉलेज से इन्टर तथा डूंगर कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह हॉस्टल जहां हम रहते थे, अब बन्द है। उसी परिसर में पहले निशुल्क हॉम्योपैथिक असपताल था जो अब भी है। जो पुस्तकालय ऊपरी हिस्से में था वह नीचे शिफ्ट कर दिया गया है। पूरा माहौल ही अब अत्याधुनिक सुविधाओं से सर्वजन लाभार्थ कर दिया गया है।

यहां से सटी कोटड़ी है जो साधु-संतों का विचरण स्थल है। हम प्रतिदिन ही प्रात: यहां साधु-संतों के दर्शनार्थ जाते थे। कभी-कभी उनके व्याख्यान भी सुनते। आयम्बिल, सामायिक, प्रतिक्रमण करते। यहीं तब आचार्य गणेशीलालजी महाराज का सान्निध्य पाया।

कोटड़ी में वीरेन्द्र मुनिजी अपने ग्यारह संतों के साथ बिराजित हैं। गौतम मुनिजी पुराने संत हैं। वे अच्छे कवि तथा साहित्यधर्मी हैं। उनके साथ पुरानी यादों का सिलसिला चला तो पं. घेवरचन्दजी 'वीरपुत्र', पं. श्यामलालजी ओझा तथा रोशनलालजी चपलोत की धार्मिक अध्यापन की यादें ताजी हो आईं। घेवरचन्दजी तो बाद में मुनि बनगये। यहीं आचार्य राममुनि के अग्रज दीक्षित हुए मुदितमुनि तथा उनके पुत्र-मुनि के साथ चन्द्रेशमुनि आदि सभी संतों के दर्शन का पुण्यार्जन आत्मीय सुख देगया।

डॉ. किरण नाहटा का स्मरण :

12 मार्च। पवनपुरी में निवास करने वाले हिन्दी-राजस्थानी के जानेमाने विद्वान किरण नाहटा के घर भी हमारा जाना हुआ। उनका निधन यकायक ही हुआ। वहां उनकी पत्नी तथा पुत्रवधू से बड़ी देर तक किरणजी की दिनचर्या तथा लेखन-प्रक्रिया विषयक बातचीत करते रहे। किसी भी साहित्यिक कार्यक्रम और विद्वत् मिलन के लिए वे सदैव तैयार रहते। उन्होंने आचार्य तुलसी के समाधि स्थल का पुस्तकालय तथा वहां का संस्थान भी अलभ्य पुस्तकों तथा चित्रों से समृद्ध किया। दूसरे दिन किरणजी के पुत्र विक्रान्त हमने मिलने आये।

इसी क्रम में हम यहां के ख्यात वकील सच्चिदानन्दजी के घर भी गये। सच्चिदानन्दजी सन् 1957-58 में यहां डूंगर कॉलेज में मेरे सहपाठी रहे। उनकी धर्मपत्नी तथा पुत्र से बड़ी देर तक उनके साथ की यादगारों को ताजा करते रहे। सच्चिदानन्दजी अपने पिताश्री की तरह फौजदारी कानूनों के विशेषज्ञ थे। उन्हीं दिनों मैं एकबार उनके पिताश्री से भी मिला था। सच्चिदानन्दजी के एक पुत्र भी उनकी यशस्वी परम्परा का निर्वाह करते फौजदारी मुकदमों के एडवोकेट हैं।

काष्ठ- गोबर के उपयोग की धुन लिये मदन डागा :

रामदेव जब दोनों बार मिलने आये तो अपने साथ अपने मित्र मदनजी डागा को भी लाये। श्री डागा बीकानेर के रहने वाले हैं परन्तु कलकत्ता में

समाजसेवा में अग्रणी मदन डागा के साथ लेखक

व्यापार करते हैं। पहले होजरी के गारमेंट्स बनाते थे अब उसका कपड़ा तैयार करते हैं। मेरे लिए भी उनके द्वारा तैयार कपड़े से निर्मित एक पूरा सिर ढकनेवाला दुरंगी टोपा लाये तो मैंने मजाक में कहा, आपने मेरे सिर पर यह टोपा फिट कर दिया है।

मदनजी बड़े सुथरे विचारों के समाजसेवी के रूप में समर्पित मन लिए चुपचाप अपना काम करते हैं। उनका महत्त्वपूर्ण एक काम पर्यावरण को सुरक्षित करने का है, खासतौर से वृक्षों को बचाने का। वे कहते हैं, वृक्ष काटकर उसकी बजाय दूसरे-तीसरे वृक्ष तैयार की बजाय हम वृक्ष को ही नहीं काटें। इस अभियान के लिए वे जहां भी जाते हैं, इसे प्राथमिकता देते हैं।

इसके लिए बीकानेर आते ही उन्होंने अपने वार्ड तथा अन्य परिचित वार्ड में रह रहे मित्रों को बुलाकर बात की कि होली पर हम लकड़ी के

काष्ठ गोबर से होली का सिणगार

बजाय उपलों द्वारा होली दाह करें। इस हेतु उन्होंने गोबर के उपले तैयार करने के लिए चौकोर सांचा तैयार कर गौशाला वालों को दिया और उसके आधार पर गोबर के उपले तैयार कर होली जलाने की प्रेरणा दी तो दस होलियां उन उपलों से जलीं। उनमें किसी में लकड़ी का उपयोग नहीं किया। उन्होंने गोबर के निश्चित आकार के लम्बे काष्ठ जैसे पाट बनाते का सुझाव देकर उसका नाम ही काष्ठ गोबर रखा।

उन्होंने दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य बीकानेर से दूरगामी शहरों तक सीधी रेल चलाने का प्रयत्न किया। इसके लिए उन्होंने कहां-कहां पापड़ बेले, सुनाकर हमें चकित कर दिया। जितने दफ्तर उन्होंने छाने और अफसरों से भेंट की, उतनी कष्टमय कसरत शायद ही कोई करे। मदनजी ने आपबीती घटनाएं, परेशानियां, धक्कमधक्की और राजनीति में उलझी गुत्थियां सुनाईं जो बड़ी ही मार्मिक हैं पर धुन के धनी होने से यह सब कष्टसाध्य, श्रमसाध्य, समयसाध्य और अर्थसाध्य घुमक्कड़ी करते रहे और अंत में उन्होंने सफलता प्राप्त की।

उनकी ऐसी रामगाथा सुन मैंने पूछ ही लिया कि ऐसा घर फूंक तमाशा करने पर आपके परिवार वालों की क्या प्रतिक्रिया रही? वे बोले, ''मेरा पहला लक्ष्य परिवार का अच्छी तरह से भरणपोषण करना रहा सो उससे मैं संतुष्ट तथा निश्चिंत हूं। उसके बाद ही ऐसे कार्य लेता हूं जिनमें मेरा कोई निजी स्वार्थ-हित नहीं रहता तो ईश्वर भी मेरा साथ देता है और अधिकारी भी संतुष्ट हो जाते हैं कि यह जनहित का कार्य है सो अन्ततोगत्वा हो ही जाता है।''

उनका परिचय उन अनेक गोशालाओं से भी है जहां वे गोबर का ठीक से सदुपयोग करने की प्रेरणा देते हैं। वे स्वयं उन स्थानों पर जाते हैं। इसी क्रम में मेरे जन्मस्थान कानोड़ में चल रही गोशाला का उन्होंने जिक्र किया जिससे मैं भी परिचित हूं। वे बोले कि कल ही मैं कानोड़ जा रहा हूं। वहां से लौटकर दो दिन बाद मिलूंगा। यही हुआ। कानोड़ से लौटकर उन्होंने मुझे बताया कि वहां जो लोग गोशाला सम्भाल रहे हैं, उनसे मैं संतुष्ट हूं। उनसे जब मदनजी ने मेरे परिचित होने का जिक्र किया तो सभी आश्चर्य करने लगे कि मदनजी का मेरे से किस तरह कैसे परिचय है।

सच ही है, कहां मदनजी का निवास, कार्यक्षेत्र और साहित्य से कोसों दूर रहकर वे गोशालाओं के रखरखाव के लिए अपना समय, रूचि और समर्पण भाव लिए हैं और कहां मेरे जैसा व्यक्ति मात्र साहित्य के लोगों से परिचित होने के बावजूद मदनजी जैसे व्यक्ति से भलीप्रकार परिचित हो गया।

नव विवाहित द्वारा विवाहिता की परिक्रमा :

यहीं डॉ. कविता की सुपरिचित सहेली श्रीमती सम्पत दाधीच ने बताया कि राजस्थान के अलग-अलग अंचल की अलग-अलग मान्यताएं हैं। बीकानेर क्षेत्र में होलिका दहन के समय नवविवाहित युगल युवक अपनी नवविवाहिता को गोद में उठाकर होली के चारोंओर परिक्रमा लगाता है। इस तरह से परिक्रमा लगाने से भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिस प्रकार भगवान विष्णु ने प्रहलाद भगत की रक्षा की थी उसी प्रकार होलिका दहन के समय होलिकाजी अपने भतीजे प्रहलाद को गोद में लेकर के बैठती है लेकिन बुराई की हार होती है। मान्यता है कि नवविवाहित युवक अपनी दुल्हन को गोद में उठाकर जलती हुई होली की परिक्रमा करने के साथ स्वस्थ दीर्घायु रहने की कामना करते हैं।

केवल यह प्रथा नवविवाहित दंपति के साथ ही नहीं है किन्तु नवजात शिशु को भी प्रथम होली पर होलिका का पूजन करके गोद में लेकर परिक्रमा कराई जाती है। मेवाड़ में इसे ढूंढ़ाना कहते हैं। मान्यता है कि ढूंढ्या राक्षस का किसी समय बड़ा आतंक था। मुख्यत: वह बच्चों का अपहरण कर उन्हें मृत्यु का मुंह दिखा देता था। उससे बचाने के लिए ही यह प्रथा प्रारम्भ हुई।

मार्च 11 को मेरी दूसरी बिटिया डॉ. कहानी वाले जामाता जितेन्द्रजी मेहता ने उदयपुर से सतीशजी को फोन किया कि उदयपुर लौटने की क्या व्यवस्था है? अपनी स्वयं की कार लाने को कह रहे थे सो ड्राईवर की व्यवस्था हुई या नहीं? इस पर कविता बोली, ड्राईवर देख रहे हैं, मिल जाना चाहिये। जितेन्द्रजी को लगा कि मामला संदिग्ध है सो बोले चलो मैं ही आ जाता हूं। उनके आने के समाचारों ने हमें अतिरिक्त खुशी दे दी। वे बस में टिकिट कराकर 13 मार्च सुबह बीकानेर पहुंचे और 14 सुबह 8 बजे हम कार से चलकर संध्या तक उदयपुर पहुंच गये। सफर चाहे कैसा भी हो, किसी भी माध्यम का, अकेला हो या साथ वाला, थकान तो आ ही जाती है सो भोजन करने के बाद अपने बिस्तर पर हेगपाट ऐसा पड़ा कि कब रात बीती और सुबह हुई, कुछ पता ही नहीं चला।

- समाप्त

बरखा रानी

-ललितकिशोर जोशी-

(1)
बरखा रानी मेहरबान हो गई
देखो देखो झड़ी लग गई
ऐसी लगी कि बस लगती गई
ताबड़तोड़ गिरती गई
नदियाँ सारी विकराल हो गईं
जान पर सबकी आफ़त बन गई
ढेरों खेत डूबो गई
कारें भी बहुत बहा गईं
अमीर के घर पकोड़ी बन गई
गरीब के चूल्हे की आग बुझ गई
स्कूलों की छुट्टी हो गई
बरखा रानी मेहरबान हो गई।

(2)
नदी-मैदान एक कर गई
शहरों की रफ़्तार रुक गई
गाँवों की बिजली गुल हो गई
विस्थापित आम जनता हो गई
मीडिया की रिपोर्ट बन गई
सरकार हेलिकॉप्टर पे निकल गई
काम की उसके पोल खुल गई
समीक्षा की कमिटी बन गई
अनुदान की राशि दी गई
एन डी आर एफ काम पे लग गई
हर वर्ष की ये कहानी हो गई
बरखा रानी मेहरबान हो गई।

(3)
पहाडों से चट्टान टूट गई
ऊंचाइयां समतल कर गई
प्रकृति अपनी ताकत दिखा गई
संयम का पाठ पढ़ा गई
कुए, तालाब, बांध भर गई
पानी का इंतजाम कर गई
धरती को हरियाली ओढ़ा गई
ललित कलित झरने बहा गई
नये जीवन की सौगात दे गई
फसलों के अंकुर फूट गई
उम्मीदों की किरण हो गई
बरखा रानी मेहरबान हो गई।

डॉ.कान्तिलाल यादव सम्मानित

नई दिल्ली (ह. सं.)। युवा समाज एवं साहित्यसेवी डॉ.कान्तिलाल यादव को जनलेखक संघ की ओर से 'राष्ट्रीय

जनसाहित्य सम्मान -2023' देश के वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व निदेशक साहित्य प्रशिक्षण संस्थान भारत सरकार के डॉ. जयप्रकाश कर्दम द्वारा 17 जून को गांधी प्रतिष्ठान नई दिल्ली सभागार में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया। समारोह में प्रशासनिक अधिकारी एवं लेखक टीकमचंद बोहरा, हर्षदान हर्ष, डॉ. महेंद्र नारायण पंकज, डॉ. नाथूलाल बैरवा, अर्जुन मानपुरिया सहित कई साहित्यकार उपस्थित थे।

सांई तिरूपति विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह सम्पन्न
300 एमबीबीएस विद्यार्थियों को मिली डिग्रियां

उदयपुर (ह. सं.)। सांई तिरूपति विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह 19 जून को शिल्पग्राम स्थित मेवाड़ बैंक्विट हॉल में आयोजित किया गया। समारोह में वर्ष 2016 एवं 17 बैंचों के 150-150 एमएमबीएस विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गई। समारोह के मुख्य अतिथि आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल एवं कंट्रोलर डॉ. विपिन माथुर थे। इस अवसर पर सांई तिरूपति विश्वविद्यालय के चैयरपर्सन आशीष अग्रवाल, को-चैयरपर्सन शीतल अग्रवाल, कुलपति डॉ. जे. के. छापरवाल, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र जैन, पीआईएमएस के प्राचार्य एवं नियंत्रक डॉ. सुरेश गोयल उपस्थित थे।

आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. विपिन माथुर ने सभी स्नातक चिकित्सा विद्यार्थियों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य करना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है जिसे कड़ी मेहनत और अटूट समर्पण से निभाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समय के साथ हुए अभूतपूर्व विकास में चिकित्सा विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका मानवता की सेवा में खुद को खो देना है। याद रखें कि डॉक्टर होना सिर्फपेशा नहीं है यह अटूट प्रतिबद्धता और सहानुभूति के साथ मानवता की सेवा करना है। रोगी सदैव डर, आशा और सपनों जैसी भावनाओं के साथ हमसें रूबरू होता है जिसे हमारे शब्द सबसे पहले सुकून देते हैं। डॉ माथुर ने कहा कि कुछ पाने के लिए हमेशा मन में सीखने की इच्छा को बनाकर रखना चाहिए, क्योंकि ज्ञान का कोई अंत नही होता। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी एक सफल डॉक्टर बनकर पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज का नाम रोशन करेंगे।

चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के आठ वर्ष पूर्ण कर चुका है। इन आठ वर्षों में हमने कई उतार-चढ़ाव देखे और हर परिस्थिति का सामना किया। इसी की बदौलत आज विश्वविद्यालय एवं हॉस्पीटल अपने सफल मुकाम पर पहुंच निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज एमबीबीएस के 2016-17 बैच के विद्यार्थी अपनी डिग्री प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि कुछ पाने के लिए हमेशा मन में सीखने की इच्छा को बनाये रखना चाहिये। क्योंकि ज्ञान का कोई अन्त नहीं होता है। उन्होंने विश्वास जताया कि सभी सफल डॉक्टर बनकर पीआईएमए का नाम यहां ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी रोशन करेंगे।

को-चेयरपर्सन शीतल अग्रवाल ने कहा कि यह सभी के लिये बहुत ही खास अवसर है क्योंकि आज आपको डॉक्टर होने का सम्मान दिया जा रहा है और यह आपके द्वारा इतने वर्षों में की गई कड़ी मेहनत का जीता जागता प्रमाण है। उन्होंने कहा कि कुछ समय वास्तव में कठिन, चुनौतीपूर्ण था। आज सिर्फ डिग्री देकर अलविदा कहने का क्षण नहीं है। यह कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और सफलता को याद करने का अवसर है।

स्वागत उद्बोधन देते हुए कुलपति डॉ. छापरवाल ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर 31.67 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है, जहाँ विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों, जैसे चिकित्सा विज्ञान, नर्सिंग, फिजियोथेरेपी, पैरामेडिकल साइंस और फैशन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, फॉर्मेसी में शैक्षणिक गतिविधियों और अनुसंधान का संचालन कर रहा है। वर्तमान में 2000 से अधिक छात्र विभिन्न कार्यक्रमों में नामांकित हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों को पहले से ही राजस्थान राज्य सरकार द्वारा विधिवत विश्वविद्यालय अधिनियम के साथ संलग्न अनुसूची में शामिल किया गया है।

ऐसे सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने से पहले संबंधित नियामक निकायों की अनुमति प्राप्त कर ली गई है। उन्होंने कहा कि जहाँ भी चिकित्सा की कला को प्रेम किया जाता है, वहाँ मानवता के लिए प्रेम होता है। आपने जीवन बचाना सीखा है जो कि श्रेष्ठ कार्य है।

पीआईएमएस के प्रिन्सिपल एवं कंट्रोलर डॉ. सुरेशचन्द्र गोयल ने कहा कि आज बड़ा ही हर्ष और गर्व का विषय है कि तीन सौ विद्यार्थियों को एमबीबीएस की डिग्रियां प्रदान की गई है। ये सभी नये डॉक्टर कल समाज में पहुंचेंगे और मेडिकल प्रेक्टिस शुरू करेंगे। छह सालों की कड़ी मेहनत और परिश्रम से जो ख्वाब उन्होंने संजोये थे आज वो साकार हो रहे हैं। आज की तारीख सभी के जीवन में एक यादगार पल बन गई है। इस अवसर पर डॉ. गोयल ने सभी विद्यार्थियों को शपथ भी दिलवाई।

रजिस्ट्रार डॉ देवेन्द्र जैन ने कहा कि कड़ी मेहनत हमेशा ही रंग लाती है। आपके अनुशासन, लगन और मेहनत के कारण आज आप डाक्टर बन कर बैठे हैं। उन्होंने सभी को बधाई देते हुए कहा कि आपके अर्जित ज्ञान का औचित्य तभी होगा जब वह समाज के काम आएगा और उम्मीद जताई कि सभी पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से समाज सेवा करेंगे।

जैन ने अपने उद्बोधन के अन्त में एक शेर बोलते हुए कहा कि-क्या रखा है किसी की धड़कन बनने में, मजा तो तभी है किसी की धड़कन वापस लाने में। उन्होंने एमबीबीएस की परीक्षा में सर्वोत्तम अंक प्राप्त कर प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता को

प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर सम्मानित किया। एमबीबीएस 2016 बेच की परीक्षा में प्रथम स्थान पर तान्या खेमचन्दानी एवं द्वितीय स्थान पर कनिष्का अग्रवाल रही जबकि एमबीबीएस 2017 बैच में अनुकृति पानेरी प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर पुजारा रिया रहीं।

समारोह के अन्त में विद्यार्थियों ने एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त करने के अपने छह साल के लम्बे सफर के अनुभव सुनाते हुए कहा कि अगर विद्यार्थी स्वयं में अनुशासन रखे, उपस्थिति बराबर दे, लगन और मेहनत करे तो सफलता निश्चित ही मिलती है। उन्होंने खासतौर से आशीष अग्रवाल और शीतल अग्रवाल का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि इनका मार्गदर्शन और हौंसला अफजाई करने का तरीका अभूतपूर्व है। इनके सहयोग से ही आज हम सभी इस मुकाम तक पहुंच पाये हैं। सभी ने सांई तिरूपति विश्वविद्यालय का आभार ज्ञापित किया। संचालन डॉ. सीमा चंपावत ने किया।

रफ्तार की प्रस्तुतियों पर झूमे दर्शक

इसी दिन शाम को पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज (पिम्स) द्वारा कल्चरल प्रोग्राम 'जेनेसिस-23 ' में बॉलीवुड के मशहूर सिंगर रैपर

रफ्तार की धाकड़ प्रस्तुतियों ने दर्शकों और मेडिकल स्नातकों की धडक़नें बढ़ा दी।

डायरेक्टर नमन अग्रवाल ने बताया कि रफ्तार ने दंगल फ़िल्म के ऐसी धाकड़ है धाकड़ है, काबिल के हसीनों का दीवाना और तमंचे पर डिस्को से युवा

दिलों को थिरकने पर मजबूर कर दिया। रफ्तार ने ओ मेरी लैला, काली-काली रैन तैरी.., स्वेग तेरा देशी स्वेग है.., जान से मारेगी या रफ्तार से मारेगी.., ओ मेरी मेहबूबा.. आदि गीत गाकर लगभग डेढ़ घंटे तक माहौल को गरमा दिया। इसके अलावा उन्होंने हाल ही में रिलीज बॉलीवुड की मूवी का गीत येनतम्मा..रेप सांग स्पीड से बढ़ो.. ड्रामा .. पापा की डांट पड़ी तो.. जैसे गीतों को अपने बैंड के साथ संगीत की धुन पर पेश कर मौसम में घुली नमी और बरसात की ठंडक को जोश से भर दिया। इस अवसर पर उन्होंने हिंदी सिनेमा, रेप, हिप हॉप, देसी हिप हॉप, पॉप, रिदम एन्ड ब्लूज और अर्बन कंटेम्परेरी म्यूजिक प्रस्तुत किया। इस अवसर डीजे पर इंडोमाफिया निखिल सेनानी, एसएमआर ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, डॉ. जे. के. छापरवाल, डॉ. देवेन्द्र जैन, डॉ. सुरेश गोयल सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संचालन आरजे दामिनी ने किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।